सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे
हिंदी विभाग

राष्ट्रीय शिक्षा नीतिः 2020 के अनुसार
पाठ्यक्रम

एम.ए. : (प्रयोजनमूलकहिंदी) प्रथम तथा द्वितीय वर्ष
अयन : प्रथम–द्वितीय, तृतीय–चतुर्थ

पाठ्यक्रम : 2023-24

मानविकी संकाय

सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे–07 (भारत)

hodhindi@unipune.ac.in

Phone : 020- 25621640/41

सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे
हिंदी विभाग

विभागीय अध्ययन मंडल

१.	प्रो. (डॉ.) विजयकुमार रोडे	–	(अध्यक्ष)
२.	प्रो. (डॉ.) सदानंद भोसले	–	सदस्य
३.	प्रो. (डॉ.) शशिकला राय	–	सदस्य
४.	डॉ. महेश दवंगे	–	सदस्य
५.	डॉ. नितीन गायकवाड	–	सदस्य
६.	डॉ. राजेंद्र घोडे	–	सदस्य

सलाहकार समिति

प्रो. (डॉ.) गजानन चव्हाण

प्रो. (डॉ.) विठ्ठल भालेराव

सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे
हिंदी विभाग

एम.ए. (प्रयोजनमूलक हिंदी) प्रथम तथा द्वितीय वर्ष

पाठ्यक्रम

अनुक्रमणिका

अ.क्र.		पाठ्यकम	श्रेयांक	पृष्ठ क्र.
1)		विभागीय अध्ययन मंडल	–	1
2)		प्रथम अयन प्रश्न पत्र सूची	–	5
3)		द्वितीय अयन प्रश्न पत्र सूची	–	6
4)		तृतीय अयन प्रश्न पत्र सूची	–	7
5)		चतुर्थ अयन प्रश्न पत्र सूची	–	8
6)		पाठ्यक्रम श्रेयांक, परीक्षा, मूल्यांकन संरचना सारिणी	–	9-13
7)	PH–1	प्रयोजनमूलक हिंदी : अवधारणा और स्वरूप	4	14-16
8)	PH–2	भाषा तथा भाषा विज्ञान	4	17-18
9)	PH–3	अनुवाद : सिद्धांत और व्यवहार	4	19-20
10)	PH–4	कंप्यूटर परिचय और भाषिक अनुप्रयोग	2	21-22
11)	PH–5	विज्ञापन लेखन और हिंदी	4	23-24
12)	PH–6	पटकथा लेखन : सिद्धांत और प्रक्रिया	4	25-26
13)	PH–7	आधुनिक हिंदी कहानी	4	27-29

14)	PH–8	विशेष रचनाकार : दामोदर खडसे	4	30-32
15)	PH–9	शोध – प्रविधि : सिद्धांत और स्वरूप	4	33-34
16)	PH–10	हिंदी भाषा की संरचना	4	35-36
17)	PH–11	राजभाषा हिंदी : संवैधानिक स्थिति	4	37-38
18)	PH–12	संचार माध्यम : सिद्धांत और स्वरूप	4	39-40
19)	PH–13	पारिभाषिक शब्दावली	2	41-42
20)	PH–14	टेलीविजन पत्रकारिता	4	43-45
21)	PH–15	हिंदी साहित्य और भारतीय संस्कृति	4	49-47
22)	PH–16	आधुनिक हिंदी कविता	4	48-50
23)	PH–17	विशेष रचनाकार : अनुज लुगुन	4	51-53
24)	PH–18	अंतः कार्य प्रशिक्षण	4	54
25)	PH–19	कार्यालयी हिंदी	4	55-56
26)	PH–20	भाषा शिक्षण	4	57-58
27)	PH–21	भाषा प्रौद्योगिकी और हिंदी	4	59-60
28)	PH–22	मशीनी अनुवाद	2	61-62
29)	PH–23	लोकसाहित्य	4	63-64
30)	PH–24	हिंदी साहित्य और सिनेमा	4	65-66
31)	PH–25	प्रवासी साहित्य	4	67-68
32)	PH–26	विशेष रचनाकार : डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे (अनुवादक)	4	69-70
33)	PH–27	लघु–शोध प्रबंध लेखन (परियोजना – I)	4	71-72
34)	PH–28	रेडियो लेखन और प्रस्तुति	4	73-75
35)	PH–29	देवनागरी लिपि की संरचना	4	76-77
36)	PH–30	माध्यम लेखन	4	78-79
37)	PH–31	सोशल मीडिया और हिंदी	4	80-81

38)	PH–32	**हिंदी साहित्य और पर्यावरण**	4	82-84
39)	PH–33	**हिंदी नाटक और रंगमंच**	4	85-86
40)	PH–34	**साहित्यिक पत्रकारिता**	4	87-88
41)	PH–35	**प्रबंध लेखन (परियोजना)**	6	89-90
42)		**परीक्षा पद्धति, मूल्यांकन एवं अंक विभाजन**		91-92

***

सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

हिंदी विभाग

एम.ए : (प्रयोजनमूलक हिंदी) प्रथम तथा द्वितीय वर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति : 2020

पाठ्यक्रम

एम.ए : (प्रयोजनमूलक हिंदी) प्रथम वर्ष

प्रथम अयन

Level : 6.0

• **अनिवार्य विषय (Major Core Mandatory)**		**Credit (श्रेयांक)**
PH–1	प्रयोजनमूलक हिंदी : अवधारणा और स्वरूप	4
PH–2	भाषा तथा भाषा विज्ञान	4
PH–3	अनुवाद : सिद्धांत और व्यवहार	4
PH–4	कंप्यूटर परिचय और भाषिक अनुप्रयोग	2
• **वैकल्पिक विषय (Major Elective Any One)**		
PH–5	विज्ञापन लेखन और हिंदी	4
PH–6	पटकथा लेखन : सिद्धांत और प्रक्रिया	4
PH–7	आधुनिक हिंदी कहानी	4
PH–8	विशेष रचनाकार : दामोदर खडसे	4
• **अनुसंधानपरक विषय (Research Methodology)**		
PH–9	शोध – प्रविधि : सिद्धांत और स्वरूप	4

एम.ए : (प्रयोजनमूलक हिंदी) प्रथम वर्ष
द्वितीय अयन
Level : 6.0

• **अनिवार्य विषय (Major Core Mandatory)**		**Credit (श्रेयांक)**
PH–10	हिंदी भाषा की संरचना	4
PH–11	राजभाषा हिंदी : संवैधानिक स्थिति	4
PH–12	संचार माध्यम : सिद्धांत और स्वरूप	4
PH–13	पारिभाषिक शब्दावली	2
• **वैकल्पिक विषय (Major Elective Any One)**		
PH–14	टेलीविजन पत्रकारिता	4
PH–15	हिंदी साहित्य और भारतीय संस्कृति	4
PH–16	आधुनिक हिंदी कविता	4
PH–17	विशेष रचनाकार : अनुज लुगुन	4
• **अंतः कार्य प्रशिक्षण (On job Training)**		
PH–18	अंतः कार्य प्रशिक्षण	4

एम.ए : (प्रयोजनमूलक हिंदी) द्वितीय वर्ष
तृतीय अयन
Level : 6.5

• **अनिवार्य विषय (Major Core Mandatory)**		**Credit (श्रेयांक)**
PH–19	कार्यालयी हिंदी	4
PH–20	भाषा शिक्षण	4
PH–21	भाषा प्रौद्योगिकी और हिंदी	4
PH–22	मशीनी अनुवाद	2
• **वैकल्पिक विषय (Major Elective Any One)**		
PH–23	लोकसाहित्य	4
PH–24	हिंदी साहित्य और सिनेमा	4
PH–25	प्रवासी साहित्य	4
PH–26	विशेष रचनाकार : डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे (अनुवादक)	4
• **अनुसंधानपरक विषय (Research Methodology)**		
PH–27	लघु–शोध प्रबंध लेखन (परियोजना–I)	4

एम.ए : (प्रयोजनमूलक हिंदी) द्वितीय वर्ष
चतुर्थ अयन
Lavel - 6.5

• **अनिवार्य विषय (Major Core Mandatory)**		**Credit (श्रेयांक)**
PH–28	रेडियो लेखन और प्रस्तुति	4
PH–29	देवनागरी लिपि की संरचना	4
PH–30	माध्यम लेखन	4
• **वैकल्पिक विषय (Major Elective Any One)**		
PH–31	सोशल मीडिया और हिंदी	4
PH–32	हिंदी साहित्य और पर्यावरण	4
PH–33	हिंदी नाटक और रंगमंच	4
PH–34	साहित्यिक पत्रकारिता	4
• **अनुसंधानपरक विषय (Research Methodology)**		
PH–35	प्रबंध लेखन (परियोजना–II)	6

सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

हिंदी विभाग

राष्ट्रीय शिक्षा नीति: 2020

पाठ्यक्रम

एम.ए. : (प्रयोजनमूलक हिंदी) प्रथम तथा द्वितीय वर्ष

अयन : प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ

पाठ्यक्रम, श्रेयांक, परीक्षा मूल्यांकन, संरचना सारिणी

प्रथम अयन

Level : 6.0

अनु. क्र.	प्रश्नपत्र संख्या	प्रश्नपत्र शीर्षक	श्रेयांक	कुल तासिकाएँ	अध्यापन	क्षेत्रीय कार्य	अंतर्गत मूल्यांकन	अयनांत परीक्षा	कुल अंक
• अनिवार्य विषय (Major Core Mandatory)									
1.	PH-1	प्रयोजनमूलक हिंदी : अवधारणा और स्वरूप	4	60	व्याख्यान		50	50	100
2.	PH -2	भाषा तथा भाषा विज्ञान	4	60	व्याख्यान		50	50	100
3.	PH -3	अनुवाद : सिद्धांत और व्यवहार	4	60	व्याख्यान		50	50	100

4.	PH -4	**कंप्यूटर परिचय और भाषिक अनुप्रयोग**	2	30	**व्याख्यान**		25	25	50
• **वैकल्पिक विषय (**Major Elective- Any one**)**									
5.	PH -5	**विज्ञापन लेखन और हिंदी**	4	60	**व्याख्यान**		50	50	100
6.	PH -6	**पटकथा लेखन : सिद्धांत और प्रक्रिया**	4	60	**व्याख्यान**		50	50	100
7.	PH -7	**आधुनिक हिंदी कहानी**	4	60	**व्याख्यान**		50	50	100
8.	PH -8	**विशेष रचनाकार : दामोदर खडसे**	4	60	**व्याख्यान**		50	50	100
• **अनुसंधानपरक विषय (**Research Methodology**)**									
9.	PH -9	**शोध–प्रविधि : सिद्धांत और स्वरूप**	4	60	**व्याख्यान**		50	50	100

एम.ए. : (प्रयोजनमूलक हिंदी) प्रथम वर्ष
द्वितीय अयन
Level : 6.0

अनु. क्र.	प्रश्नपत्र संख्या	प्रश्नपत्र शीर्षक	श्रेयांक	कुल तासिकाएँ	अध्यापन	क्षेत्रीय कार्य	अंतर्गत मूल्यांकन	अयनांत परीक्षा	कुल अंक
• अनिवार्य विषय (Major Core Mandatory)									
10.	PH -10	हिंदी भाषा की संरचना	4	60	व्याख्यान		50	50	100
11.	PH -11	राजभाषा हिंदी : संवैधानिक स्थिति	4	60	व्याख्यान		50	50	100
12.	PH -12	संचार माध्यम : सिद्धांत और स्वरूप	4	60	व्याख्यान	क्षेत्रीय कार्य	50	50	100
13.	PH -13	पारिभाषिक शब्दावली	2	30	व्याख्यान		25	25	50
• वैकल्पिक विषय (Major Elective - Any one)									
14.	PH -14	टेलीविजन पत्रकारिता	4	60	व्याख्यान	क्षेत्रीय कार्य	50	50	100
15.	PH -15	हिंदी साहित्य और भारतीय संस्कृति	4	60	व्याख्यान		50	50	100
16.	PH -16	आधुनिक हिंदी कविता	4	60	व्याख्यान		50	50	100
17.	PH -17	विशेष रचनाकार : अनुज लुगुन	4	60	व्याख्यान		50	50	100
• अंत:कार्य प्रशिक्षण (On Job Training)									
18.	PH -18	अंत:कार्य प्रशिक्षण	4	60	अंत:कार्य प्रशिक्षण		50	50	100

एम.ए. : (प्रयोजनमूलक हिंदी) द्वितीय वर्ष
तृतीय अयन
Level : 6.5

* Exit Option : PG Diploma (44 Credits) after Three Year UG DEgree

अनु. क्र.	प्रश्नपत्र संख्या	प्रश्नपत्र शीर्षक	श्रेयांक	कुल तासिकाएँ	अध्यापन	क्षेत्रीय कार्य	अंतर्गत मूल्यांकन	अयनांत परीक्षा	कुल अंक
• अनिवार्य विषय (Major Core Mandatory)									
19.	PH-19	कार्यालयी हिंदी	4	60	व्याख्यान		50	50	100
20.	PH -20	भाषा शिक्षण	4	60	व्याख्यान		50	50	100
21.	PH -21	भाषा प्रौद्योगिकी और हिंदी	4	60	व्याख्यान	क्षेत्रीय कार्य	50	50	100
22.	PH -22	मशीनी अनुवाद	2	30	व्याख्यान	क्षेत्रीय कार्य	25	25	50
• वैकल्पिक विषय (Major Elective -any one)									
23.	PH -23	लोकसाहित्य	4	60	व्याख्यान		50	50	100
24.	PH -24	हिंदी साहित्य और सिनेमा	4	60	व्याख्यान		50	50	100
25.	PH -25	हिंदी का वैश्विक परिदृश्य	4	60	व्याख्यान		50	50	100
26.	PH -26	विशेष रचनाकार : डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे (अनुवादक)	4	60	व्याख्यान		50	50	100
• अनुसंधानपरक विषय (Research Methodology)									
27.	PH -27	लघु–शोध प्रबंध लेखन : (शोध परियोजना– I)	4	60	प्रबंध लेखन		50		
					पी पी टी		20		100
					मौखिकी		30		

एम.ए. : (प्रयोजनमूलक हिंदी) द्वितीय वर्ष
चतुर्थ अयन
Level : 6.5

अनु. क्र.	प्रश्नपत्र संख्या	प्रश्नपत्र शीर्षक	श्रेयांक	कुल तासिकाएँ	अध्यापन	क्षेत्रीय कार्य	अंतर्गत मूल्यांकन	अयनांत परीक्षा	कुल अंक
• अनिवार्य विषय (Major Core Mandatory)									
28.	PH-28	रेडियो लेखन और प्रस्तुति	4	60	व्याख्यान	क्षेत्रीय कार्य	50	50	100
29.	PH-29	देवनागरी लिपि की संरचना	4	60	व्याख्यान		50	50	100
30.	PH-30	माध्यम लेखन	4	60	व्याख्यान	क्षेत्रीय कार्य	50	50	100
• वैकल्पिक विषय (Major Elective Any One)									
31.	PH-31	सोशल मीडिया और हिंदी	4	60	व्याख्यान		50	50	100
32.	PH-32	हिंदी साहित्य और पर्यावरण	4	60	व्याख्यान		50	50	100
33.	PH-33	हिंदी नाटक और रंगमंच	4	60	व्याख्यान	क्षेत्रीय कार्य	50	50	100
34.	PH-34	हिंदी आलोचना	4	60	व्याख्यान		50	50	100
• प्रबंध लेखन (Research Project)									
35.	PH-35	प्रबंध–लेखन : (शोध परियोजना– II)	6	90	प्रबंध लेखन		100		
					पी पी टी		20		150
					मौखिकी		30		

एम. ए. : (प्रयोजनमूलक हिंदी) प्रथम वर्ष
प्रथम अयन
Level : 6.0

PH- 1 प्रयोजनमूलक हिंदी : अवधारणा और स्वरूप **श्रेयांक–4**

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

1. प्रयोजनमूलक हिंदी की अवधारणा और स्वरूप से अवगत कराना ।
2. सामान्य हिंदी तथा प्रयोजनमूलक हिंदी के अंतर से परिचित कराना।
3. कार्यालय में प्रयुक्त हिंदी का परिचय देना ।
4. जनसंचार माध्यमों के स्वरूप से परिचित कराना।
5. जनसंचार की प्रक्रिया से अवगत कराना।

अध्यापन पद्धति :

● व्याख्यान पद्धति ● विश्लेषण पद्धति ● समूह चर्चा ● स्वाध्याय

पाठ्यविषय:

इकाई– I प्रयोजनमूलक हिंदी : अवधारणा और स्वरूप

प्रयोजनमूलक हिंदी की स्वरूपगत विशेषताएँ

प्रयोजनमूलक हिंदी के व्यवहार क्षेत्र

प्रयोजनमूलक हिंदी की विविध प्रयुक्तियाँ ।

इकाई– II कार्यालयी हिंदी की प्रकृति एवं प्रमुख प्रकार्य

कार्यालयी हिंदी की स्वरूपगत विशेषताएँ

कार्यालयी पत्र–व्यवहार के विविध रूप

प्रारूपण, पत्रलेखन, संक्षेपण, पल्लवन, टिप्पण, अनुवाद।

इकाई– III जनसंचार क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग एवं प्रकार्य

जनसंचार : तात्पर्य, स्वरूप एवं परिभाषा

जनसंचार माध्यम : विभिन्न रूप

परंपरागत जनसंचार माध्यम

आधुनिक जनसंचार माध्यम

जनसंचार माध्यमों में प्रयुक्त हिंदी भाषा

जनसंचार माध्यमों में प्रयुक्त हिंदी की प्रमुख विशेषताएँ

इकाई– IV वित्त एवं वाणिज्य के क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग एवं प्रकार्य

वित्त एवं वाणिज्य के क्षेत्र में प्रयुक्त हिंदी का स्वरूप

वित्त एवं वाणिज्य के क्षेत्र में प्रयुक्त हिंदी की प्रमुख विशेषताएँ

वित्त एवं वाणिज्य के क्षेत्र में हिंदी की आवश्यकता

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात छात्र सामान्य हिंदी और प्रयोजनमूलक हिंदी के अंतर को समझेंगे।
2. प्रयोजनमूलक हिंदी की विशेषताएं एवं उपयोगिता से परिचित होंगे।
3. प्रयोजनमूलक हिंदी के विभिन्न कार्यक्षेत्रों का परिचय प्राप्त करेंगे।
4. प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रयोग की शैली तथा शब्दावली से परिचित होंगे।
5. प्रयोजनमूलक हिंदी की विशिष्ट शब्दावली से अवगत होंगे।

पाठ्यक्रम अंक विभाजन –

आंतरिक मूल्यांकन : 50

अयनांत परीक्षा : 50

कुलअंक : 100

संदर्भ ग्रंथ :

1. प्रयोजनमूलक हिंदी प्रयुक्ति और अनुवाद – डॉ. माधव सोनटक्के
2. प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. विनोद गोदरे
3. प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. तेजपाल चौधरी
4. प्रयोजनमूलक हिंदी अधुनातन आयाम – डॉ. अंबादास देशमुख

5. **प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. रामप्रकाश, डॉ. दिनेश गुप्त**
6. **प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत और प्रयोग – दंगल झाल्टे**
7. **प्रयोजनमूलक हिंदी – परमानंद पांचाल**
8. **प्रयोजनमूलक हिंदी के आधुनिक आयाम – डॉ. राणा**
9. **प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. राजनाथ भट्ट**
10. **प्रयोजनमूलक हिंदी की नयी भूमिका – कैलाशनाथ पाण्डेय**

***

एम. ए. : (प्रयोजनमूलक हिंदी) प्रथम वर्ष
प्रथम अयन
Level : 6.0

PH- 2 भाषा तथा भाषा विज्ञान **श्रेयांक–4**

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. भाषा विज्ञान के स्वरूप, व्याप्ति और अध्ययन की दिशाओं का परिचय देना।
2. भाषा विज्ञान के सैद्धांतिक अनुप्रयोगात्मक पक्ष से अवगत कराना।
3. साहित्य–अध्ययन में भाषा विज्ञान की उपयोगिता से परिचय कराना।
4. भाषा विज्ञान की अवधारणा से अवगत कराना।
5. भाषा विज्ञान की विविध इकाइयों से परिचित कराना।

अध्यापन पद्धति :

● व्याख्यान पद्धति ● समूह चर्चा ● स्वाध्याय

इकाई– I भाषा विज्ञान : परिभाषा, स्वरूप और व्याप्ति।
भाषा विज्ञान के अध्ययन की दिशाएँ
भाषा विज्ञान के भेद– वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक और अनुप्रयुक्त।
समाजभाषा विज्ञान का सामान्य परिचय।

इकाई– II स्वनिम विज्ञान : स्वन की परिभाषा, वागावयव और कार्य, स्वन वर्गीकरण, स्वनगुण, स्वनिम परिवर्तन, स्वनिम की परिभाषा, स्वरूप और विश्लेषण।

इकाई– III रूपिम विज्ञान : रूप प्रक्रिया का स्वरूप और शाखाएँ, रूपिम की परिभाषा, रूपिम के भेद और प्रकार्य।
पदबंध और उपवाक्य : पदबंध का स्वरूप, पदबंध के भेद, उपवाक्य का स्वरूप, उपवाक्य के भेद।

इकाई– IV वाक्य विज्ञान : वाक्य की परिभाषा और स्वरूप, वाक्य के भेद, वाक्य विश्लेषण।

अर्थ विज्ञान : अर्थ की परिभाषा और स्वरूप, शब्द और अर्थ का संबंध, अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ और कारण।

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. **भाषा विज्ञान के स्वरूप एवं व्याप्ति का परिचय होगा।**
2. **भाषा विज्ञान के अध्ययन की पद्धतियों से अवगत होंगे।**
3. **भाषा विज्ञान के अध्ययन की उपशाखाओं का ज्ञान प्राप्त करेंगे।**
4. **भाषा विज्ञान की अवधारणा तथा प्रमुख भाषावैज्ञानिकों के सिद्धांतों का परिचय प्राप्त करेंगे।**
5. **भाषा विज्ञान की अवधारणा एवं कार्यों से अवगत होंगे।**

पाठ्यक्रम अंक विभाजन –

आंतरिक मूल्यांकन : 50

अयनांत परीक्षा : 50

कुलअंक : 100

संदर्भ ग्रंथ :

1. **भाषा और समाज – रामविलास शर्मा**
2. **सांस्कृतिक भाषा विज्ञान – डॉ. रामानंद तिवारी**
3. **भाषा विज्ञान – सं. डॉ. राजमल बोरा**
4. **भाषा विज्ञान : सैद्धांतिक चिंतन – डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव**
5. **भाषा विज्ञान – भोलानाथ तिवारी**
6. **भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र – डॉ. कपिलदेव द्विवेदी**
7. **हिंदी भाषा संरचना – डॉ. भोलानाथ तिवारी**
8. **आधुनिक भाषाविज्ञान – डॉ. कृपाशंकर सिंह, डॉ. चतुर्भुज सहाय**
9. **भाषा विज्ञान के अधुनातन आयाम – डॉ. अंबादास देशमुख**
10. **अद्यतन भाषा विज्ञान – पाण्डेय शशीभूषण 'शितांशु'**

एम. ए. : (प्रयोजनमूलक हिंदी) प्रथम वर्ष
प्रथम अयन
Level : 6.0

PH- 3 अनुवाद : सिद्धांत और व्यवहार **श्रेयांक–4**

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. अनुवाद के स्वरूप, व्याप्ति और उपयोगिता से परिचित कराना ।
2. अनुवाद – प्रक्रिया का सैद्धांतिक परिचय देना ।
3. अनुवाद के सामाजिक–सांस्कृतिक पक्ष से अवगत कराना।
4. बदलते ज्ञान के विस्तार के युग में अनुवाद के महत्व से परिचित कराना।
5. अनुवाद प्रक्रिया का परिचय कराकर कौशल का विकास कराना ।

अध्यापन पद्धति :

● व्याख्यान ● पद्धति ● विश्लेषण पद्धति ● समूह चर्चा

पाठ्यविषय :

इकाई– I अनुवाद का स्वरूप : अनुवाद शब्द का व्यूत्पत्तिगत अर्थ, परिभाषाएँ, अनुवाद का महत्व अनुवाद चिंतन की पाश्चात्य परंपरा, अनुवाद चिंतन की भारतीय परंपरा अनुवाद विषयक प्रमुख सिद्धांत

इकाई– II अनुवाद की प्रक्रिया एवं प्रविधि : स्त्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा, स्त्रोत भाषा के पाठ का बोधन, लक्ष्य भाषा में अंतरण, पुनः सृजन, प्रक्रियागत स्थितियाँ, अर्थयोग, अर्थहानि, अर्थांतरण, अनुद्यता, अनअनुद्यता, पुनरीक्षण

इकाई– III अनुवाद के प्रकार : स्वरूप के आधार पर अनुवाद के प्रकार, प्रक्रिया के आधार पर अनुवाद के प्रकार, पाठ के आधार पर अनुवाद के प्रकार, साहित्य विधा के आधार पर अनुवाद के प्रकार, अनुवाद के अन्य प्रकार।

इकाई– IV अनुवाद कार्य में सहायक साधन : कोश, सूचियाँ, विषय विशेष के ग्रंथ, संगणक, विभिन्न ऑनलाईन एप्लीकेशन्स

मशीनी अनुवाद : स्वरूप, प्रक्रिया एवं आवश्यकता, मशीनी अनुवाद की सीमाएँ, श्रेष्ठ अनुवाद की विशेषताएँ, अनुवादक के गुण।

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात छात्र अनुवाद प्रक्रिया एवं परपंरा से परिचित होंगे।
2. भिन्न भाषा व्यवस्था में अनुवाद के महत्व को प्राप्त कर सकेंगे।
3. अनुवाद प्रक्रिया का ज्ञान प्राप्त कर अनुवाद कौशल को विकसित करेंगे।
4. वर्तमान समय में ज्ञान एवं शिक्षा के विस्तार में अनुवाद का महत्व प्राप्त करेंगे।
5. रोजगार की दृष्टि से अनुवाद के कौशल को प्राप्त करेंगे।

पाठ्यक्रम अंक विभाजन –

आंतरिक मूल्यांकन : 50

अयनांत परीक्षा : 50

कुल अंक : 100

संदर्भ ग्रंथ :

1. अनुवाद की रूपरेखा – डॉ. सुरेश कुमार
2. अनुवाद कला – भोलानाथ तिवारी
3. अनुवाद की प्रक्रिया तकनीक और समस्याएँ – डॉ. श्रीनारायण समीर
4. अनुवाद और अनुप्रयोग – डॉ. दिनेश चमोला
5. अनुवाद के भाषिक पक्ष – विभा गुप्ता
6. हिंदी अनुवाद परंपरा : एक अनुशील – डॉ. किशोरीलाल
7. अनुवाद की समस्याएँ – सं. जी. गोपीनाथन
8. अनुवाद प्रक्रिया एवं परिदृश्य – रीतारानी पालीवाल
9. अनुवाद संवेदना और सरोकार – सुरेश सिंहल
10. व्यावहारिक अनुवाद – विश्वनाथ अय्यर

***

एम. ए. : (प्रयोजनमूलक हिंदी) प्रथम वर्ष
प्रथम अयन
Level : 6.0

PH- 4 कंप्यूटर परिचय और भाषिक अनुप्रयोग **श्रेयांक–2**

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. छात्रों को कंप्यूटर की कार्यप्रणाली से अवगत कराना।
2. छात्रों को हिंदी के विभिन्न सॉफ्टवेयर से अवगत कराना ।
3. छात्रों को हिंदी टंकण का प्रत्यक्ष कार्य करवाना।
4. छात्रों को इंटरनेट एवं वेब पेज से अवगत कराना।
5. मशीनी अनुवाद के विभिन्न एप्लीकेशन्स से अवगत कराना।

अध्यापन पद्धति :

● व्याख्यान पद्धति ● विश्लेषण पद्धति ● प्रात्यक्षिक कार्य

पाठ्यविषय :

इकाई– I कंप्यूटर परिचय : कंप्यूटर शब्द की उत्पत्ति, कंम्यूटर विकास के विविध चरण, कंप्यूटर के प्रकार, कंप्यूटर के मुख्य घटक, कंप्यूटर मेमोरी– प्राथमिक, माध्यमिक तथा कैश मेमोरी, हार्डवेअर तथा सॉफ्टवेअर, संख्या प्रणाली, कंप्यूटर की भाषाएँ, आदि की सामान्य जानकारी, कंप्यूटर और इंटरनेट।

इकाई– II कंप्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग :

भाषा प्रौद्योगिकी की अवधारणा और स्वरूप, वाक् प्रौद्योगिकी, हिंदी भाषा शिक्षण में सहायक विविध ऐप (डुओलिंगो, Busuu Bebbel, इंटरेस्ट पॉलीग्लॉट, एक भाषा सिखें, Learn101, वर्तनी जाँचक, डिजिटल पुस्तकालय, कंप्यूटर साधित भाषा अधिगम कोश निर्माण, मशीनी अनुवाद– (गूगल ट्रान्सलेट, हिंदी इंग्लिश ट्रान्सलेटर, ट्रान्सलेट ऑल लैग्वेजस, माइक्रोसॉफ्ट ट्रान्सलेटर, इंग्लिश टू हिंदी ट्रान्सलेटर ऐप, इंग्लिश हिंदी डिक्शनरी, हाई ट्रान्सलेटर) चैट जीपीटी की अवधारणा और स्वरूप।

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. **प्रस्तुत पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात छात्र कंप्यूटर के उद्भव एवं विकास से परिचित होंगे।**
2. **कंप्यूटर की तकनीकी कार्यप्रणाली से अवगत होंगे।**
3. **हिंदी भाषा, साहित्य एवं शिक्षण में कंप्यूटर के महत्व को आत्मसात करेंगे।**
4. **हिंदी भाषा एवं साहित्य के प्रमुख कंप्यूटर प्रोग्राम से अवगत होंगे।**
5. **हिंदी भाषा, साहित्य एवं अनुसंधान में कंप्यूटर की उपयोगिता का परिचय प्राप्त करेंगे।**

पाठ्यक्रम अंक विभाजन –

आंतरिक मूल्यांकन : 25

अयनांत परीक्षा : 25

कुलअंक : 50

संदर्भ ग्रंथ :

1. Fundamental of Computer - Rajaraman, Prentice Hall indiapvt. Limited, New Delhi
2. I. T. Tools and -Application - Mansoor, Pragya Publication, New Delhi
3. **कंप्यूटरी सूचना प्रणाली विकास – राम बंसल**
4. **जनसंचारिकी सिद्धांत और अनुप्रयोग – डॉ. रामलखन मीणा**
5. **सामयिक प्रयोजनमूलक हिंदी – पृथ्वीनाथ पाण्डेय**
6. Learning Desk Publishing - Bangia Ramesh, Khanna Book Publishing, Delhi.
7. BPB's DTP Course - Satish Jain, BPS Publication, New Delhi.
8. Corel Draw - Vishnupriya Singh, -sian Computech books, Delhi.
9. Smart DTP Course - Behera Mishra, B. K. Publication Pvt. Ltd, Delhi.
10. Web Designing Course - Singh, Minakshi Singh, VishnuPriya, -sian Publisher, Delhi.

***

एम. ए. : (प्रयोजनमूलक हिंदी) प्रथम वर्ष
प्रथम अयन
Level : 6.0

PH- 5 विज्ञापन लेखन और हिंदी (वैकल्पिक) **श्रेयांक–4**

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. विज्ञापन के स्वरूप और महत्त्व का परिचय देना।
2. विज्ञापन के भाषिक पक्ष से अवगत कराना।
3. विज्ञापन–लेखन प्रविधि का प्रशिक्षण देना।
4. विज्ञापन संपादन, निर्देशन कला से अवगत कराना।
5. विज्ञापनों में हिंदी की भूमिका से परिचित कराना।

अध्यापन पद्धति :

● व्याख्यान पद्धति ● समूह चर्चा ● क्षेत्रीय कार्य

पाठ्यविषय :

इकाई– I विज्ञापन : अर्थ, परिभाषा, स्वरूप
विज्ञापन का उद्भव एवं विकास
विज्ञापन के विविध प्रकार

इकाई– II विज्ञापन प्रसारण के विविध माध्यम
विज्ञापन की उपयोगिता, विज्ञापन और व्यवसाय
विज्ञापन की प्रमुख विशेषताएँ, विज्ञापन के प्रमुख कार्य

इकाई– III विज्ञापन : निर्माण कार्यविधि, विज्ञापन संयोजन, विज्ञापन कॉपी एवं कॉपी अपील, विज्ञापन पाठ सामग्री, विज्ञापन लेखन कला, संपादन, निर्देशन एवं प्रस्तुति

इकाई– IV विज्ञापन और भाषा का अंत:संबंध, विज्ञापन और हिंदी, विज्ञापन का पाठक श्रोता एवं दर्शक पर प्रभाव, विज्ञापन और मनोविज्ञान, विज्ञापन और उपभोक्ता, विज्ञापन कानून एवं आचार–संहिता।

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात छात्र विज्ञापन की संकल्पना एवं उसके महत्त्व से अवगत होंगे।
2. विज्ञापन के आरंभ और विकास से परिचित होंगे।
3. विज्ञापन लेखन कौशल प्राप्त करेंगे।
4. विज्ञापन लेखन प्रक्रिया तथा विज्ञापन और भाषा के अंत:संबंध से अवगत होंगे।
5. वर्तमान सामाजिक जीवन में विज्ञापन की आवश्यकता को समझेंगे।

पाठ्यक्रम अंक विभाजन –

आंतरिक मूल्यांकन : 50

अयनांत परीक्षा : 50

कुलअंक : 100

संदर्भ ग्रंथ :

1. विज्ञापन – अशोक महाजन
2. मीडिया लेखन : सिद्धांत और व्यवहार – डॉ. चंद्रप्रकाश
3. प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. माधव सोनटक्के
4. डिजिटल युग में विज्ञापन – सुधासिंह, जगदीश्वर चतुर्वेदी
5. विज्ञापन की दुनिया – कुमुद शर्मा
6. विज्ञापन भाषा – रेखा सेठी
7. विज्ञापन–विज्ञान और उसका प्रयोग – कन्हैयालाल शर्मा
8. हिंदी विज्ञापनों का पहला दौर – आशुतोष पार्थेश्वर
9. विज्ञापन तकनीक एवं सिद्धांत – नरेंद्रसिंह यादव
10. विक्रय एवं विज्ञापन – डॉ. नीरजकुमार सिंह

***

एम. ए. : (प्रयोजनमूलक हिंदी) प्रथम वर्ष
प्रथम अयन
Level : 6.0

PH- 6 पटकथा लेखन : सिद्धांत और प्रक्रिया (वैकल्पिक) श्रेयांक–4

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. पटकथा लेखन की प्रक्रिया से छात्रों को परिचित कराना।
2. पटकथा लेखन का महत्त्व समझाना।
3. पटकथा लेखन के लिए छात्रों को प्रेरित करना।
4. वर्तमान समय में पटकथा लेखन की उपयोगिता को समझाना।
5. पटकथा लेखन कौशल विकसित कराना।

अध्यापन पद्धति :

● व्याख्यान पद्धति ● समूह चर्चा ● क्षेत्रीय कार्य

पाठ्यविषय :

इकाई – I पटकथा लेखन परिचय, पटकथा का अर्थ एवं स्वरूप एवं प्रक्रिया
पटकथा की भूमिका एवं महत्त्व, पटकथा लेखन के तत्व

इकाई – II पटकथा लेखन की विशेषताएँ, पटकथा लेखन की शैलियाँ
फ़िल्म की पटकथा, धारावाहिक की पटकथा
फ़िल्म की पटकथा और धारावाहिक की पटकथा में अंतर

इकाई – III पटकथा में कहानी, कहानी का चयन, कहानी का विकास
अंकपरक विभाजन, दृश्य विभाजन, पात्र एवं संवाद

इकाई – IV पटकथा लेखन व्यावहारिक कार्य, फ़िल्म पटकथा लेखन, टी.वी. धारावाहिक लेखन, शॉर्ट फ़िल्म लेखन

पाठ्यक्रम की उपादेयता –

1. **प्रस्तुत पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात छात्र पटकथा लेखन की अवधारणा से अवगत होंगे।**
2. **पटकथा लेखन की प्रक्रिया का परिचय होगा।**
3. **पटकथा लेखन की विशेषताएँ एवं महत्व से परिचित होंगे।**
4. **पटकथा लेखन की विभिन्न शैलियाँ अवगत करेंगे।**
5. **पटकथा लेखन का कौशल विकसित होगा।**

पाठ्यक्रम अंक विभाजन

आंतरिक मूल्यांकन: 50

अयनांत परीक्षा : 50

कुलअंक : 100

संदर्भ सूची –

1. **पटकथा लेखन एक परिचय – मनोहर श्याम जोशी**
2. **समाचार लेखन के सिद्धांत और तकनीक – डॉ. संजीव भागवत**
3. **टेलीविजन पटकथा लेखन – विनोद तिवारी**
4. **पटकथा लेखन एक परिचय – मनोहर श्याम जोशी**
5. **जनसंचार माध्यम : भाषा और साहित्य – डॉ. सुधीर पचौरी**
6. **मीडिया लेखन सिद्धांत और व्यवहार – डॉ. चंद्रप्रकाश मिश्र**
7. **पटकथा लेखन – कुलदीप सिन्हा**
8. **पटकथा लेखन – उमेश राठौर**
9. **पटकथा लेखन : तकनीक एवं विधियाँ – सुदर्शन कुमार**
10. **पटकथा लेखन – अस़गर वजाहत**

***

एम. ए. : (प्रयोजनमूलक हिंदी) प्रथम वर्ष
प्रथम अयन
Level : 6.0

PH- 7 आधुनिक हिंदी कहानी (वैकल्पिक) श्रेयांक–4

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात छात्र आधुनिक हिंदी कहानी के उद्‌भव और विकास से परिचित होंगे।
2. आधुनिक हिंदी कहानी के विभिन्न आंदोलनों के स्वरूप से अवगत होंगे।
3. आधुनिक हिंदी कहानीकारों का परिचय होगा।
4. आधुनिक हिंदी कहानी में अभिव्यक्त विविध समस्याओं से अवगत होंगे।
5. आधुनिक हिंदी कहानी की मुख्य प्रवृत्तियों का परिचय होगा।

अध्यापन पद्धति :

● व्याख्यान पद्धति ● विश्लेषण पद्धति ● समूह चर्चा

पाठ्यविषय :

इकाई– I आधुनिक हिंदी कहानी : प्रेमचंद पूर्व हिंदी कहानी (सन 1900–1915 ई.), प्रेमचंद युगीन हिंदी कहानी (सन् 1916–1936 ई.), प्रेमचंदोत्तर हिंदी कहानी (सन् 1936–1950 ई.) नई कहानी (1950 के बाद) प्रमुख कहानीकार, कहानी की मुख्य प्रवृत्तियाँ, शिल्पगत प्रयोग

इकाई– II साठोत्तर हिंदी कहानी के प्रमुख आंदोलन : सचेतन कहानी, अकहानी, समानांतर कहानी, जनवादी कहानी, उत्तरशती की कहानी, इक्कीसवीं शताब्दी की आरंभिक कहानी प्रमुख कहानीकार, आधुनिकताबोध, कहानी की मुख्य प्रवृत्तियाँ, शिल्पगत प्रयोग

इकाई– III कहानी साहित्य :

दो बैलों की कथा– प्रेमचंद

पंचलाइट– फणीश्वरनाथ रेणू

दिल्ली में एक मौत– कमलेश्वर

सेवा– ममता कालिया

मोरपंख– टेकचंद

समग्र कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन

इकाई– IV कहानी साहित्य : (पारिस्थितिक केंद्रित कहानियाँ)

जंगलजातकन– काशिनाथ सिंह

कहीं दूर जब दिन ढल जाए– बटरोही

कपिल का पेड– राजेश जोशी

जिनावर– चित्रा मुद्गल

इक्कीसवीं सदी का पेड– मृदुला गर्ग

समग्र कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. **प्रस्तुत पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात छात्र आधुनिक हिंदी कहानी के आरंभ और विकास से अवगत होंगे।**
2. **आधुनिक हिंदी की मुख्य प्रवृत्तियों से परिचित होंगे।**
3. **आधुनिक प्रमुख कहानीकारों के कहानी लेखन और साहित्य का परिचय प्राप्त करेंगे।**
4. **वर्तमान कहानियों में अभिव्यक्त पर्यावरण विमर्श की अवधारणा से अवगत होंगे।**
5. **समकालीन हिंदी कहानियों के विषय एवं शिल्पविधान का परिचय प्राप्त करेंगे।**

पाठ्यक्रम अंक विभाजन

आंतरिक मूल्यांकन : 50

अयनांत परीक्षा : 50

कुलअंक : 100

संदर्भ ग्रंथ :

1. **हिंदी कहानी का इतिहास – गोपाल राय**
2. **नयी कहानी संदर्भ और प्रकृति– देवीशंकर अवस्थी**
3. **हिंदी कहानी का विकास – मधुरेश**
4. **नयी कहानी की संरचना – हेमलता**
5. **उत्तरशती की हिंदी कहानी – तेज सिंह**
6. **कहानी : नयी पुरानी – सं. रघुवीर सिंह**
7. **हिंदी कहानी के सौ साल – दिनेश कर्नाटक**
8. **कहानी नयी कहानी – नामवर सिंह**
9. **हिंदी कहानी वक्त की शिवाख्त और सृजन का राग – रोहिणी अग्रवाल**
10. **अच्छी कहानी अवधारणा और पहचान – सं. शंकर**

***

एम. ए. : (प्रयोजनमूलक हिंदी) प्रथम वर्ष
प्रथम अयन
Level : 6.0

PH- 8 विशेष रचनाकार : दामोदर खडसे (वैकल्पिक) श्रेयांक–4

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. हिंदीतर भाषी हिंदी रचनाकार के रूप में दामोदर खडसे जी का जीवन तथा साहित्यिक परिचय कराना।
2. रचनाकार दामोदर खडसे जी के उपन्यास तथा कहानी साहित्य से अवगत कराना।
3. रचनाकार के काव्य साहित्य से परिचित कराना।
4. दामोदर खडसे जी के साहित्य में अभिव्यक्त विविध समस्याओं से छात्रों को अवगत कराना।
5. रचनाकार दामोदर खडसे जी के अनुवाद कार्य से परिचित कराना।

अध्यापन पद्धति :

● व्याख्यान पद्धति ● समूह चर्चा ● भेंटवार्ता

पाठ्यविषय :

इकाई– I हिंदीतर भाषी हिंदी लेखक के रूप में दामोदर खडसे जी का जीवन एवं साहित्यिक परिचय, दामोदर खडसे जी के समकालीन हिंदीतर भाषी हिंदी लेखक एवं उनका लेखन कार्य, दामोदर खडसे जी के लेखन के प्रमुख विषय एवं संदर्भ, रचनाकार के रूप में दामोदर खडसे जी के लेखन के विविध पहलू

इकाई– II उपन्यास साहित्य :

काला सूरज – दामोदर खडसे

बादल राग – दामोदर खडसे

आलोचनात्मक अध्ययन

इकाई– III कहानी साहित्य :

भटकते कोलंबस

आखिर वह एक नदी थी

इस जंगल में

गौरया को तो घुस्सा नहीं आता

साहब फिर कब आएंगे माँ!

आलोचनात्मक अध्ययन

इकाई– IV काव्य साहित्य :

अब वहाँ घोंसले हैं

नदी कभी नहीं सूखती

सन्नाटे में रोशनी

अतीत नहीं होती नदी

बाढ़

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. **प्रस्तुत पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात छात्र रचनाकार दामोदर खडसे जी के जीवन तथा साहित्यिक योगदान से अवगत होंगे।**
2. **रचनाकार की रचना प्रक्रिया का परिचय होगा।**
3. **रचनाकार दामोदर खडसे जी द्वारा लिखित उपन्यास साहित्य में अभिव्यक्त समस्याओं का ज्ञान होगाा**
4. **रचनाकार द्वारा रचित कहानी साहित्य का स्वरूप एवं संदर्भ ज्ञात होगा।**
5. **कविता में व्यक्त समसामयिक संदर्भों से छात्र अवगत होंगे।**

पाठ्यक्रम अंक विभाजन

आंतरिक मूल्यांकन : 50

अयनांत परीक्षा : 50

कुलअंक : 100

संदर्भ ग्रंथ :

1. **कागज़ की जमीन पर – सं. डॉ. सुनील देवधर**
2. **शब्दों की दहलीज पर – सं. डॉ. सुनील देवधर**
3. **डॉ. दामोदर खडसे का सृजन संसार – डॉ. महीपति शिवराम**
4. **दामोदर खडसे – रचना परिवेश – डॉ. जसपालसिंग**
5. **साहित्य के शिखर – दामोदर खडसे – प्रो. संजय नवले**
6. **दामोदर खडस : एक शिनाख्त – सं. संदीप मुरारका**
7. **नदी के साथ–साथ – डॉ. विजया**
8. **दामोदर खडसे के साहित्य का अनुशीलन (शोध–प्रबंध)**
9. **दामोदर खडसे का व्यक्तित्व एवं कृतित्व (शोध–प्रबंध)**
10. **अनुवादक के रूप में दामोदर खडसे का हिंदी भाषा को योगदान (शोध–प्रबंध)**

***

एम. ए. : (प्रयोजनमूलक हिंदी) प्रथम वर्ष
प्रथम अयन
Level : 6.0

PH- 9 शोध–प्रविधि : सिद्धांत और स्वरूप **श्रेयांक–4**

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. छात्रों को शोध–प्रविधि से अवगत कराना।
2. शोध दृष्टि का विकास करना।
3. छात्रों को शोध प्रक्रिया और शोध प्रबंध से अवगत करवाना।
4. शोध प्रबंध लेखन कौशल विकसित कराना।
5. शोध का महत्त्व तथा उपयोगिता प्रतिपादित करना।

अध्यापन पद्धति :

● व्याख्यान पद्धति ● समूह चर्चा ● विश्लेषण पद्धति

पाठ्यविषय :

इकाई– I शोध की अवधारणा, स्वरूप एवं परिभाषाएँ, शोध के लिए प्रयुक्त विभिन्न शब्द एवं उनका औचित्य।
शोध के उद्देश्य, शोध के लिए विषय चयन की प्रक्रिया,
शोध विषय निश्चिति तथा शोध का प्रारूप निर्माण।
वस्तुनिष्ठ, तर्कसंगति, प्रमाणबद्धता शोध– प्रक्रिया में तर्क का महत्व,

इकाई– II शोध के प्रकार : वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, सर्वेक्षणात्मक, अंतर्विद्याशाखीय
साहित्यिक तथा साहित्येतर शोध में समानता–असमानता, शोध प्रक्रिया के विभिन्न चरण

इकाई–III शोध के लिए सामग्री संकलन स्रोत, शोध और आलोचना, शोधकर्ता एवं शोध निर्देशक, समन्वय, शोधकार्य और समय प्रबंधन, संपन्न शोध–कार्य की शैक्षिक–सामाजिक उपादेयता।

इकाई– IV शोध–प्रबंध लेखन प्रणाली :

शोध प्रबंध, शीर्षक निर्धारण, रूपरेखा, भूमिका लेखन, अध्याय विभाजन, संदर्भ उल्लेख, सहायक ग्रंथ सूची, परिशिष्ट, वर्तनी सुधार।

शोधालेख लेखन, पुस्तक समीक्षा।

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात छात्र शोध का महत्त्व एवं उपयोगिता से अवगत होंगे।
2. छात्रों को शोध–प्रक्रिया का आकलन होगा।
3. छात्र शोध की भिन्न पद्धतियों से परिचित होंगे।
4. शोध के भिन्न–भिन्न उद्देश्यों से अवगत होंगे।
5. प्रबंध लेखन कौशल को आत्मसात करेंगे।

पाठ्यक्रम अंक विभाजन –

आंतरिक मूल्यांकन : 50

अयनांत परीक्षा : 50

कुलअंक : 100

संदर्भ ग्रंथ :

1. हिंदी अनुसंधान – विजयपाल सिंह
2. शोध प्रविधि – डॉ. विनयमोहन शर्मा
3. अनुसंधान की प्रक्रिया – डॉ. सावित्री सिन्हा, डॉ. विजयेंद्र स्नातक
4. अनुसंधान प्रविधि – सुरेशचंद्र निर्मल
5. अनुसंधान के तत्व – विश्वनाथप्रसाद मिश्र
6. शोधतंत्र और सिद्धांत – शैलकुमारी
7. अनुसंधान और आलोचना – डॉ. नगेंद्र
8. अनुसंधान का स्वरूप – सं. डॉ. सावित्री सिन्हा
9. अनुसंधान स्वरूप और आयाम – सं.डॉ. उमाकांत गुप्त
10. अनुसंधान की प्रविधि एवं प्रक्रिया – डॉ. राजेंद्र मिश्र

एम. ए. : (प्रयोजनमूलक हिंदी) प्रथम वर्ष
द्वितीय अयन
Level : 6.0

PH- 10 हिंदी भाषा की संरचना **श्रेयांक–4**

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. हिंदी भाषा की व्याकरणिक संरचना से परिचित कराना।
2. हिंदी भाषा के व्यावहारिक कौशल की क्षमता विकसित करना।
3. हिंदी भाषा और अन्य भाषा–संरचना का परिचय देना।
4. भाषा में पद, पदबंध तथा पदक्रम से परिचित कराना।
5. हिंदी भाषा पर अन्य भारतीय भाषाओं के प्रभाव से अवगत कराना।

अध्यापन पद्धति :

● व्याख्यान पद्धति ● विश्लेषण पद्धति ● समूह चर्चा

पाठ्यविषय :

इकाई– I हिंदी की व्याकरणिक कोटियाँ

लिंग, वचन, पुरुष, कारक और पुनरावलोकन ।

इकाई– II हिंदी की व्याकरणिक कोटियाँ :

काल, पक्ष, वृत्ति और वाच्य, पुनरावलोकन।

इकाई– III हिंदी का वाक्य विन्यास, पद, पदबंध, पदक्रम

उपवाक्य, रचना के आधार पर वाक्य भेद, वाक्य पृथक्करण, वाच्य और प्रयोग

अन्विति और हिंदी के प्रमुख वाक्य साँचे।

इकाई– IV हिंदी पर हिंदीत्तर भारतीय तथा विदेशी भाषाओं का प्रभाव :

शब्दरचना, रूप–रचना, वाक्य विन्यास आदि के संदर्भ में।

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. **प्रस्तुत पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात छात्र हिंदी भाषा की व्याकरणिक संरचना से परिचित होंगे।**
2. **हिंदी भाषा के मानक उच्चारण पद्धति को अवगत करेंगे।**
3. **हिंदी भाषा के विशुद्ध लेखन कौशल से परिचित होंगे।**
4. **भाषा और वाक्य, शब्द, प्रयोग आदि से परिचित होंगे।**
5. **हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषा के पारस्परिक संबंधों से परिचित होंगे।**

पाठ्यक्रम अंक विभाजन –

आंतरिक मूल्यांकन : 50

अयनांत परीक्षा : 50

कुलअंक : 100

संदर्भ ग्रंथ :

1. **हिंदी व्याकरण – पं. कामताप्रसाद गुरु**
2. **हिंदी शब्दानुशासन – आ. किशोरीदास वाजपेयी**
3. **मानक हिंदी का स्वरूप – डॉ. भोलानाथ तिवारी**
4. **हिंदी भाषा – डॉ. हरदेव बहारी**
5. **हिंदी भाषा : स्वरूप और विकास – कैलाशचंद्र भाटिया**
6. **हिंदी भाषा की संरचना – भोलानाथ तिवारी**
7. **हिंदी भाषा संरचना के विविध आयाम – रवींद्रनाथ श्रीवास्तव**
8. **हिंदी भाषा : इतिहास और संरचना – हरिश्चंद्र पाठक**
9. **हिंदी भाषा का इतिहास – गोपाल राय**
10. **विशुद्ध हिंदी भाषा – प्रो. सदानंद भोसले**

***

एम. ए. : (प्रयोजनमूलक हिंदी) प्रथम वर्ष
द्वितीय अयन
Level : 6.0

PH- 11 राजभाषा हिंदी : संवैधानिक स्थिति **श्रेयांक–4**

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. राजभाषा के स्वरूप और विकास से परिचित कराना ।
2. राजभाषा और अन्य भाषाओं की अवधारणा का ज्ञान देना ।
3. राजभाषा के संबंध में संवैधानिक स्थिति से अवगत कराना ।
4. त्रिभाषा सूत्र और राजभाषा के कार्यान्वयन की जानकारी देना ।
5. राजभाषा और राष्ट्रभाषा की अवधारणा से अवगत कराना।

अध्यापन पद्धति :

● व्याख्यान पद्धति ● विश्लेषण पद्धति ● समूह चर्चा

पाठ्यविषय :

इकाई– I राजभाषा हिंदी : संकल्पना, स्वरूप एवं परिभाषा ।
राजभाषा, सह राजभाषा, द्वितीय राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा, राजभाषा का अभिलक्षणिक स्तर पर अंतर

इकाई– II राष्ट्र–विकास में हिंदी भाषा की भूमिका
भारत की बहुभाषिकता और एक संपर्क भाषा की आवश्यकता
राजभाषा के रूप में हिंदी की स्वीकृति संबंधी मतभेदों का स्वरूप

इकाई– III राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति : संविधान का भाग–17 अनुच्छेद 120 से 210 और अनुच्छेद 343 से 351, राष्ट्रपति का आदेश – 1952, 1955, 1960, राष्ट्रभाषा अधिनियम–1976

इकाई– IV राजभाषा एकक और प्रबंधन, वार्षिक कार्यक्रम और उसका कार्यान्वयन
राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन की समस्याएँ और बाधक तत्व, द्विभाषा नीति और त्रिभाषा सूत्र।
हिंदी के प्रचार–प्रसार में सरकारी और स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं की भूमिका।

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात छात्र राजभाषा की संवैधानिक स्थिति से परिचित होंगे।
2. राजभाषा की संकल्पना एवं स्वरूप से अवगत होंगे।
3. राजभाषा हिंदी के प्रमुख प्रकार्य से परिचित होंगे।
4. भारत सरकार की राजभाषा नीति से अवगत होंगे।
5. राजभाषा के प्रमुख प्रकार्य से परिचित होंगे।

पाठ्यक्रम अंक विभाजन –

आंतरिक मूल्यांकन : 50

अयनांत परीक्षा : 50

कुलअंक : 100

संदर्भ ग्रंथ

1. राजभाषा हिंदी – डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया
2. राष्ट्रभाषा हिंदी – डॉ. भोलानाथ तिवारी
3. प्रयोजनमूलक हिंदी – रवींद्रनाथ तिवारी
4. राष्ट्रभाषा हिंदी : समस्याएँ और समाधान – डॉ. देवेंद्रनाथ शर्मा
5. राजभाषा हिंदी : विवेचन और प्रयुक्ति – डॉ. किशोर वासवानी
6. भारत का संविधान : प्राधिकृत संस्करण 2005
7. राजभाषा हिंदी – सेठ गोविंददास
8. राजभाषा प्रबंधन – डॉ. गोवर्धन ठाकुर
9. हिंदी : राष्ट्रभाषा से राजभाषा तक – विमलेश कांति वर्मा
10. राजभाषा के संदर्भ में हिंदी आंदोलन का इतिहास – उदयनारायण दुबे

***

एम. ए. : (प्रयोजनमूलक हिंदी) प्रथम वर्ष
द्वितीय अयन
Level : 6.0

PH- 12 संचार माध्यम : सिद्धांत और स्वरूप श्रेयांक–4

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. संचार माध्यम और संप्रेषण का अवधारणाओं की परिचय देना।
2. संचार माध्यमों की उपयोगिता से अवगत कराना।
3. संचार माध्यमों के प्रमुख माध्यमों का परिचय कराना।
4. संचार माध्यम की बहुआयामी भूमिका का परिचय देना ।
5. संचार माध्यमों द्वारा प्रसारित सूचनाओं के स्वरूप से अवगत कराना।

अध्यापन पद्धति :

● व्याख्यान पद्धति ● विश्लेषण पद्धति ● समूह चर्चा

पाठ्यविषय :

इकाई– I संचार, जनसंचार तथा संप्रेषण : अवधारणा और स्वरूप
संचार माध्यम : सिद्धांत और स्वरूप
संचार के संघटक तत्व
संचार माध्यमों से लाभ–हानि ।

इकाई– II संचार माध्यम का स्वरूप, विकास एवं कार्य
सूचना क्रांति बनाम सूचना–उद्योग
संचार माध्यम के प्रकार : 1) परंपरागत 2) मौखिक 3) लिखित 4) आधुनिक ।

इकाई– III आधुनिक संचार माध्यम : 1) मुद्रित, 2) रेडियो, 3) सिनेमा, 4) टेलीविजन, 5) नव इलैक्ट्रॉनिक माध्यम, संचार माध्यमों द्वारा संप्रेषित संदेश की भाषिक प्रकृति।

इकाई– IV संचार माध्यमों की बहुआयामी भूमिका : 1) जनसंपर्क, 2) सूचना प्रसारण 3) पर्यावरण शिक्षा 4) शिक्षा का प्रसारण, 5) जनसमस्या का समाधान, 6) मनोरंजन वर्तमान सूचना क्रांति के विविध आयाम।

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. **प्रस्तुत पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात छात्र संचार के विविध माध्यमों से परिचित होंगे।**
2. **संचार प्रक्रिया के स्वरूप से अवगत होंगे।**
3. **समाज, शिक्षा, पर्यावरण आदि क्षेत्रों में संचार के महत्व को समझेंगे।**
4. **संचार माध्यमों की उपयोगिता को आत्मसात कर पाएंगे।**
5. **संचार के पारंपारिक और आधुनिक माध्यमों क्से परिचित होंगे।**

पाठ्यक्रम अंक विभाजन –

आंतरिक मूल्यांकन : 50

अयनांत परीक्षा : 50

कुलअंक : 100

संदर्भ ग्रंथ :

1. **जनसंचार के विविध आयाम – ब्रजमोहन गुप्त**
2. **जनमाध्यम और मासकल्चर – जगदीश्वर चतुर्वेदी**
3. **जनमाध्यम और पत्रकारिता (भाग : 1, 2) – प्रवीण दीक्षित**
4. **रेडियो और दूरदर्शन और हिंदी – डॉ. हरिमोहन**
5. **जनमाध्यम : संप्रेषण और विकास – देवेंद्र इस्सर**
6. **सिनेमाई भाषा और हिंदी संवादों का विश्लेषण – डॉ. किशोर वासवानी**
7. **जनसंचार – राधेश्याम शर्मा**
8. **जनसंचार सिद्धांत और अनुप्रयोग – विष्णु राजगढ़िया**
9. **जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता सर्वांग – डॉ. जितेंद्र वत्स, डॉ. किरण बाल**
10. **जनसंचार और हिंदी पत्रकारिता – डॉ. अर्जुन तिवारी**

***

एम. ए. : (प्रयोजनमूलक हिंदी) प्रथम वर्ष
द्वितीय अयन
Level : 6.0

PH- 13 पारिभाषिक शब्दावली **श्रेयांक–2**

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के द्वारा छात्रों को पारिभाषिक शब्दावली की संकल्पना एवं महत्व से अवगत कराना।
2. पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण प्रक्रिया से परिचित कराना।
3. पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के सिद्धांतों से अवगत कराना।
4. पारिभाषिक शब्दावली के प्रयोग के विभिन्न क्षेत्रों से परिचित कराना।
5. पारिभाषिक शब्दावली की उपयोगिता से छात्रों को अवगत कराना।

अध्यापन पद्धति :

● व्याख्यान पद्धति ● समूह चर्चा ● विश्लेषण पद्धति

पाठ्यविषय :

इकाई– I पारिभाषिक शब्दावली : संकल्पना, स्वरूप, परिभाषा एवं प्रमुख विशेषताएँ
पारिभाषिक शब्दावली निर्माण का इतिहास,
पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता एवं महत्व,
पारिभाषिक शब्दावली के भेद।

इकाई– II पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की प्रक्रिया, पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के विविध सिद्धांत, पारिभाषिक शब्दावली निर्धारणः समस्या एवं समाधान, पारिभाषिक शब्दावली प्रयोग के विभिन्न क्षेत्र।

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात छात्र पारिभाषिक शब्दावली की संकल्पना एवं स्वरूप से परिचित होंगे।

2. **पारिभाषिक शब्दावली के इतिहास से अवगत होंगे।**
3. **पारिभाषिक शब्दावली निर्माण प्रक्रिया से परिचित होंगे।**
4. **पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के प्रमुख सिद्धांतों को जान पाएंगे।**
5. **पारिभाषिक शब्दावली के महत्व तथा उपयोगिता से अवगत होंगे।**

पाठ्यक्रम अंक विभाजन –

आंतरिक मूल्यांकन : 25

अयनांत परीक्षा : 25

कुलअंक : 50

संदर्भ ग्रंथ :

1. **प्रयोजनमूलक हिंदी की नयी भूमिका – कैलाशनाथ पांडे**
2. **प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रूप – डॉ. राजेंद्र मिश्र, राकेश शर्मा**
3. **प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. विनोद गोदरे**
4. **प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. राजनाथ भट्ट**
5. **प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. मुकेश अग्रवाल**
6. **प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. माधव सोनटक्के**
7. **प्रयोजनमूलक हिंदी : विविध आयाम – डॉ. अर्चना श्रीवास्तव**
8. **प्रयोजनमूलक हिंदी – केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा**
9. **प्रयोजनमूलक हिंदी : प्रक्रिया और स्वरूप – डॉ. कैलासचंद भाटिया**
10. **प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत और प्रयोग – दंगल झाल्ट**

***

एम. ए. : (प्रयोजनमूलक हिंदी) प्रथम वर्ष
द्वितीय अयन
Level : 6.0

PH- 14 टेलीविजन पत्रकारिता (वैकल्पिक) श्रेयांक–4

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. टेलीविजन पत्रकारिता पाठ्यक्रम के द्वारा छात्रों को नव इलैक्ट्रॉनिक पत्रकारिता से परिचित कराना।
2. मुद्रित पत्रकारिता और टेलीविजन पत्रकारिता की प्रक्रिया से अवगत कराना।
3. टेलीविजन पत्रकारिता के लिए आवश्यक लेखन, प्रस्तुति एवं उपकरण कार्य संचालन से अवगत कराना।
4. टेलीविजन पत्रकार की योग्यता एवं आवश्यक भाषायी ज्ञान से अवगत कराना।
5. टेलीविजन पत्रकारिता का वर्तमान और भविष्य का स्वरूप आदि से परिचित कराना।

अध्यापन पध्दति :

● व्याख्यान पध्दति ● विश्लेषण पध्दति ● क्षेत्रीय कार्य

पाठ्यविषय :

इकाई– I टेलीविजन पत्रकारिता का उद्भव एवं विकास :
भारत में टेलीविजन पत्रकारिता का आरंभ, पत्रकारिता के विकास के विभिन्न चरण, टेलीविजन पत्रकारिता चैनल, आरंभिक टेलीविजन पत्रकारिता का स्वरूप, टेलीविजन पत्रकारिता का अन्य क्षेत्र पर प्रभाव, वर्तमान समय और टेलीविजन पत्रकारिता।

इकाई– II टेलीविजन पत्रकारिता की प्रक्रिया : टेलीविजन पत्रकारिता लेखन, संपादन एवं प्रस्तुति, पत्रकार के लिए आवश्यक योग्यताएँ, टेलीविजन पत्रकारिता प्रशिक्षण केंद्र, टेलीविजन पत्रकारिता और भाषा–प्रस्तुति, टेलीविजन पत्रकारिता के विविध पहलू

इकाई– III टेलीविजन समाचार का संगठनात्मक कार्य :

रिपोर्टर, नेशनल ब्यूरो, आऊट स्टेशन ब्यूरो, मुख्यालय ब्यूरो, विशेष ब्यूरो, एसआईटी, इनपुट प्रमुख, शोधकर्ता, एंकर्स, डेस्क, समाचार समन्वयक, समाचार संपादक, समाचार निर्माता आदि।

इकाई– IV टेलीविजन समाचार निर्माण आऊटपुटः न्यूज डेस्क, बुलेटिन प्रोडयूसर, पैकेज प्रोडयूसर, असिस्टंट प्रोडयूसर, टेलीविजन समाचार तकनीकी तंत्रः न्यूज रूम, आटोमेशन, वोडियो संपादन, स्टूडियो और पीसीआर, वीडियो मॉनीटर रूम, मास्टर नियंत्रण रूम आदि।

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. **प्रस्तुत पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात छात्र टेलीविजन पत्रकारिता के उद्भव और विकास से परिचित होंगे।**
2. **टेलीविजन पत्रकारिता का स्वरूप एवं प्रक्रिया से अवगत होंगे।**
3. **टेलीविजन पत्रकारिता के संगठनात्मक कार्य से अवगत होंगे।**
4. **मुद्रित पत्रकारिता और टेलीविजन पत्रकारिता के अंतर को अनुभव करेंगे।**
5. **टेलीविजन समाचार की निर्माण प्रक्रिया से अवगत होंगे।**

पाठ्यक्रम अंक विभाजन :

आंतरिक मूल्यांकन : 50

अयनांत परीक्षा : 50

कुलअंक : 100

संदर्भ ग्रंथ :

1. **टेलीविजन पत्रकारिता सिध्दांत एवं तकनीक – डॉ. इंद्रजीत सिंह**
2. **इलैक्ट्रॉनिक मीडिया – आर्य पी. के.**
3. **इलैक्ट्रानिक मीडिया – संजीव भानावत**
4. **भारतीय इलैक्ट्रानिक मीडिया – देववृत सिंह**
5. **टेलीविजन समाचार – मुस्तफा जेरी**

6. **एंकर रिर्पोटर – पुण्यप्रसून वाजपेयी**
7. **नए जनसंचार माध्यम और हिंदी – सुधीश पचौरी**
8. **टेलीविजन की कहानी – श्याम कश्यप**
9. **रेडियो और दूर–दर्शन पत्रकारिता – प्रो. हरिमोहन**
10. **टेलीविजन पत्रकारिता – माधुरी सिन्हा**

***

एम. ए. : (प्रयोजनमूलक हिंदी) प्रथम वर्ष
द्वितीय अयन
Level : 6.0

PH- 15 हिंदी साहित्य और भारतीय संस्कृति (वैकल्पिक) श्रेयांक–4

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

6. छात्रों को भारतीय संस्कृति का परिचय देना।
7. भारतीय संस्कृति की परंपरा की समझ विकसित करना।
8. संस्कृति, समाज और साहित्य के संबंधों को गहनता से समझना।
9. भारतीय दर्शन के विभिन्न विचारों का अध्ययन कराना।
10. भारतीय समाज और संस्कृति के अंत: संबंध से अवगत कराना।

अध्यापन पद्धति :

● व्याख्यान पद्धति ● विश्लेषण पद्धति ● समूह चर्चा

पाठ्यविषय :

इकाई– I भारतीय संस्कृति का संक्षिप्त परिचय
भारतीय संस्कृति का इतिहास
भारतीय संस्कृति का आर्थिक–सामाजिक–राजनैतिक विकास
प्राचीन भारतीय दर्शन का संक्षिप्त परिचय

इकाई– II मध्यकाल में भारतीय संस्कृति : रामानुजाचार्य, बल्लभाचार्य, निंबार्काचार्य, मध्वाचार्य के दर्शन का साहित्य पर प्रभाव
भक्तिकाल व रीतिकाल के कवियों में प्रतिबिंबित भारतीय संस्कृति की छवि
कबीर, तुलसी, सूर, जायसी आदि कवियों की रचनाओं का समाज पर प्रभाव

इकाई–III आधुनिककाल में भारतीय संस्कृति, भूमंडलीकरण और भारतीय संस्कृति, संस्कृति और साहित्य में परस्पर संबंध, विभिन्न आधुनिक विचारधाराएँ

इकाई– IV समकालीन साहित्य में प्रतिबिंबित भारतीय संस्कृति
निबंध– अशोक के फूल (ह.प्र. द्विवेदी), गूलर के फूल (कुबेरनाथ राय)

कविता– भारत– भारती अतीत खंड (मैथिलीशरण गुप्त)

कहानी– हार की जीत (सुदर्शन), पिता– ज्ञानरंजन

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

6. **छात्र भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को समझेंगे।**
7. **साहित्य और संस्कृति के अंत:संबंधों से अवगत होंगे।**
8. **भारतीय संस्कृति को प्रभावित करनेवाले दर्शन को आत्मसात करेंगे।**
9. **विभिन्न कवि/विचारकों की रचनाओं और विचारधाराओं का विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।**
10. **भारतीय संस्कृति में निहित मानवीय मूल्यों से परिचय प्राप्त करेंगे।**

पाठ्यक्रम अंक विभाजन –

आंतरिक मूल्यांकन : 50

अयनांत परीक्षा : 50

कुलअंक : 100

संदर्भ ग्रंथ :

1. **संस्कृति के चार अध्याय – रामधारी सिंह 'दिनकर'**
2. **साहित्य, संस्कृति और भाषा –ऋषभदेव शर्मा**
3. **साहित्य और संस्कृति –रामविलास शर्मा**
4. **जायसी – विजयनारायण साही**
5. **हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल**
6. **भारतीय दर्शन – डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन**
7. **भारतीय संस्कृति का इतिहास – डॉ. सुशीला सिंह**
8. **भारतीय संस्कृति – नरेंद्र मोहन**
9. **भारतीय संस्कृति के आधार – विद्यानिवास मिश्र**
10. **भारतीय संस्कृति में मानव मूल्य और लोककल्याण – सुरेश शर्मा**

***

एम. ए. : (प्रयोजनमूलक हिंदी) प्रथम वर्ष
द्वितीय अयन
Level : 6.0

PH- 16 आधुनिक हिंदी कविता (वैकल्पिक) **श्रेयांक–4**

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. छात्रों को आधुनिक हिंदी कविता के आरंभ और विकास का परिचय देना।
2. आधुनिक हिंदी कविता की मुख्य प्रवृत्तियों से परिचित कराना।
3. आधुनिक हिंदी कविता के प्रमुख कवि तथा उनके काव्य साहित्य से अवगत कराना।
4. आधुनिक हिंदी कविता में अभिव्यक्त समस्याओं से परिचित कराना।
5. काव्य साहित्य के प्रति छात्रों में रूचि निर्माण करना।

अध्यापन पद्धति :

● व्याख्यान पद्धति ● विश्लेषण पद्धति ● समूह चर्चा

पाठ्यविषय :

इकाई– I आधुनिक कविता के उदय की पृष्ठभूमि

भारतेंदु हरिश्चंद्र युग की कविता (1850-1900)

पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी युग की कविता (1900-1920)

छायावादी युग की कविता (1920–1936)

उत्तर–छायावादी युग की कविता (1936–1943)

आलोचनात्मक अध्ययन।

इकाई– II प्रगतिवादी युग की कविता, प्रयोगवादी युग का कविता, साठोत्तरी हिंदी कविता, भूमंडलीकरण और हिंदी कविता, वर्तमान हिंदी कविता में विविध विमर्श आलोचनात्मक अध्ययन।

इकाई–III कविता पाठ :

कर्मवीर– अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

ग्राम्य जीवन– मुकुटधर पांडेय

मधुशाला– हरिवंशराय बच्चन

असाध्य वीना – अज्ञेय

कृष्ण की चेतावनी– रामधारीसिंह दिनकर

हमारे समय के बच्चे– राजेश जोशी

समग्र कविताओं का आलोचनात्मक अध्ययन

इकाई– IV कविता पाठ :

बेदखल– निलय उपाध्याय

दौड़– कुमार अंबुज

लालटेन– जयप्रकाश कर्दम

बेजगह– अनामिका

उतनी दूर मत ब्याहना बाबा– निर्मला पुतुल

गर्म राख – डॉ. सुखबीर सिंह

समग्र कविताओं का आलोचनात्मक अध्ययन

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात छात्र आधुनिक कविता के उदय की पृष्ठभूमि से अवगत होंगे।
2. आधुनिक कविता की मुख्य प्रवृत्तियों का परिचय प्राप्त करेंगे।
3. आधुनिक कविता के विकास के विविध चरणों से परिचित होंगे।
4. आधुनिक कविता के भाव सौंदर्य से अवगत होंगे।
5. आधुनिक कविता में प्रयुक्त भाषा, शैली, बिंब, प्रतीक आदि का परिचय प्राप्त करेंगे।

पाठ्यक्रम अंक विभाजन –

आंतरिक मूल्यांकन : 50

अयनांत परीक्षा : 50

कुलअंक : 100

संदर्भ ग्रंथ :

1. आधुनिक हिंदी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ – डॉ. नगेंद्र
2. आधुनिक कविता यात्रा – रामस्वरूप चतुर्वेदी

3. **आधुनिक हिंदी कविता का इतिहास – नंदकिशोर नवल**
4. **आधुनिक कविता की भाषा – नंदकिशोर चतुर्वेदी**
5. **छायावाद – नामवर सिंह**
6. **हिंदी की प्रगतिवादी कविता – डॉ. सुरेंद्र प्रसाद**
7. **प्रगतिवाद – शिवकुमार मिश्र**
8. **आधुनिक कविता का पुनर्पाठ – प्रो. करूणाशंकर उपाध्याय**
9. **कविता सदी– सं. सुरेश सलिल**
10. **कविता का वर्तमान – सं. डॉ. पी. रवि**

***

एम. ए. : (प्रयोजनमूलक हिंदी) प्रथम वर्ष
द्वितीय अयन
Level : 6.0

PH- 17 विशेष साहित्यकार: अनुज लुगुन (वैकल्पिक) श्रेयांक–4

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. विशेष साहित्यकार के रूप में अनुज लुगुन का परिचय कराना।
2. समकालीन कविता की प्रवृत्तियों का बोध कराना।
3. अनुज लुगुन की प्रतिनिधि कविताओं का सूक्ष्म अध्ययन।
4. अनुज लुगुन की प्रतिनिधि कविताओं का आस्वाद कराना।
5. अनुज लुगुन का समकालीन कविताओं में योगदान।

अध्यापन पद्धति :

● व्याख्यान पद्धति ● विश्लेषण पद्धति ● समूह चर्चा

पाठ्यविषय :

इकाई– I समकालीन हिंदी कविता का परिचय और पृष्ठभूमि

समकालीन हिंदी कविता के प्रमुख कवि– कवयित्रियों का संक्षिप्त परिचय

अनुज लुगुन का जीवन तथा साहित्यिक परिचय

इकाई– II पत्थलगड़ी– अनुज लुगुन (चुनिंदा कविताएँ)

1. आधी रात की कविता
2. उनके प्रतीक
3. मुझे मेरी नागरिकता दे दो
4. हमारी सदी के लिए न्याय का मुहावरा
5. प्रेम की नागरिकता

इकाई– III पत्थलगड़ी– अनुज लुगुन (चुनिंदा कविताएँ)

1. अल्पसंख्यक

2. **पत्थलगड़ी**

3. **कथावाचक**

4. **मेरे गाँव में सीआरपीएफ कैंप लग गया है**

5. **इतिहास के रास्ते का सूरज**

इकाई– IV अनुज लुगुन की कविता का भाव सौंदर्य, साहित्यिक– सामाजिक उपादेयता, साहित्यगत मूल्यांकन

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. **प्रस्तुत पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात छात्रों की कविताओं के प्रति रुचि विकसित हो सकेगी।**
2. **विद्यार्थियों के भीतर संवेदनात्मक और ज्ञानात्मक संवेदना (मुक्तिबोध के शब्दों में) विकसित हो सकेगी।**
3. **मानव जीवन में कविता और कविता में मानव जीवन के महत्व को छात्र समझ सकेंगे।**
4. **वर्तमान सामाजिक समस्याओं का कविता के माध्यम से बोध होगा।**
5. **कविता में व्यक्त सौंदर्शबोध से छात्र अवगत होंगे।**

पाठ्यक्रम अंक विभाजन

आंतरिक मूल्यांकन : 50

अयनांत परीक्षा : 50

कुलअंक : 100

संदर्भ ग्रंथ :

1. **शब्द और देशकाल – कुँवरनारायण**
2. **आलोचना की पहली किताब – विष्णु खरे**
3. **समकालीन हिंदी कविता का यथार्थ – परमानंद श्रीवास्तव**
4. **समकालीन हिंदी कविता – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी**
5. **एक कवि की नोटबुक –**

6. **कविता और समय – अरुण कमल**
7. **पत्थलगडी – अनुज लुगुन**
8. **अनुज लुगुन की प्रतिनिधि कविताएँ – सं. पंकज चतुर्वेदी**
9. **कविता की मुक्ति – नंदकिशोर नवल**
10. **फिलहाल – अशोक वाजपेयी**

***

एम. ए. (प्रयोजनमूलक हिंदी) प्रथम वर्ष
द्वितीय अयन
Level : 6.0

PH-18 अंत: कार्य प्रशिक्षण (On job Training) श्रेयांक–4

अंत : कार्य प्रशिक्षण के उद्देश्य :

1. अंत : कार्य प्रशिक्षण के द्वारा छात्रों को उद्यमिता की ओर आकर्षित कराना।
2. छात्रों के औद्योगिक कौशल को विकसित कराना।
3. अर्जित ज्ञान को पत्रकारिता, अनुवाद, अध्यापन आदि क्षेत्र के कौशल विकास में प्रयोग में लाना।
4. शिक्षा को रोजगाराभिमुख बनाने में सहायता करना।
5. शिक्षा और कौशल का संयोग स्थापित कराना।

संभावित क्षेत्र :

● पत्रकारिता ● अनुवाद ● इलैक्ट्रॉनिक मीडिया ● अध्यापन कार्य

अंत : कार्य प्रशिक्षण की उपादेयता :

1. प्रस्तुत प्रशिक्षण कार्य के द्वारा छात्र अध्ययन के साथ–साथ रोजगाराभिमुख कौशल प्राप्त करेंगे।
2. अध्ययन के साथ–साथ स्वयंरोजगार तथा आत्मनिर्भरता की सोच का विस्तार होगा।
3. ज्ञान के साथ–साथ कौशल भी आत्मसात करेंगे।
4. अंत : कार्य (On job Training) के द्वारा छात्र उद्यमिता की ओर आकर्षित होंगे।
5. ज्ञान और कौशल के संयोग से छात्र भविष्य की चुनौतियों के प्रति सक्षम होंगे।

अंक विभाजन :

1. प्रशिक्षण : 50
2. अहवाल लेखन : 30
3. मौखिकी : 20

***

एम. ए. (प्रयोजनमूलक हिंदी) द्वितीय वर्ष
तृतीय अयन
Level : 6.5

PH- 19 कार्यालयी हिंदी श्रेयांक–4

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के द्वारा कार्यालयी हिंदी का स्वरूप एवं कार्यक्षेत्रों से अवगत कराना।
2. कार्यालयी हिंदी की प्रमुख विशेषताओं का परिचय कराना।
3. कार्यालयी हिंदी और सामान्य हिंदी के अंतर को छात्रों से अवगत कराना।
4. कार्यालयों में प्रयोग किए जानेवाले विभिन्न कार्य प्रकारों में हिंदी के प्रयोग संबंधी निर्देशों से अवगत कराना।
5. कार्यालयी हिंदी भाषा की शब्द प्रकृति से परिचय कराना।

अध्यापन पद्धति :

- व्याख्यान पद्धति
- विश्लेषण पद्धति
- समूह चर्चा

पाठ्यक्रम :

इकाई– I हिंदी भाषा के विविध रूप : सृजनात्मक भाषा, संचार भाषा, राजभाषा, माध्यमभाषा, मातृभाषा प्रमुख विशेषताएं एवं कार्य

इकाई– II कार्यालयी हिंदी : तात्पर्य, स्वरूप, क्षेत्र और विशेषताएँ

इकाई– III कार्यालयी लेखन : प्रक्रिया एवं प्रविधि

प्रारूपण, संक्षेपण, पल्लवन, टिप्पण, आलेखन, प्रतिवेदन

इकाई– IV सरकारी पत्राचार : सरकारी पत्र

अर्ध सरकारी पत्र, परिपत्र,

अनुशासनिक पत्र, कार्यालय ज्ञापन

कार्यालयी आदेश, सूचना, अधिसूचना, संकल्प, निविदा, करार आदि।

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. प्रस्तुत पाठयक्रम का अध्ययन करने के पश्चात छात्र कार्यालयी हिंदी के स्वरूप और कार्यक्षेत्र से अवगत होंगे।
2. कार्यालयी हिंदी की मुख्य प्रवृत्तियों का परिचय प्राप्त करेंगे।
3. कार्यालयी कामकाज से परिचित होंगे।
4. कार्यालयों में प्रयुक्त हिंदी भाषा की विशिष्ट शब्दावली को जान पाएंगे।
5. कार्यालयों में प्रयुक्त विभिन्न कार्यों के कौशल को प्राप्त करेंगे।

पाठ्यक्रम अंक विभाजन :

आंतरिक मूल्यांकन : 50

अयनांत परीक्षा : 50

कुल अंक : 100

संदर्भ ग्रंथ :

1. प्रयोजनमूलक हिंदी प्रयुक्ति और अनुवाद – प्रो. माधव सोनटक्के
2. कामकाजी हिंदी – केशरीलाल शर्मा
3. कामकाजी हिंदी – डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया
4. कार्यालयी हिंदी – ठाकुरदास
5. प्रयोजनमूलक हिंदी और कार्यालयी हिंदी – डॉ. कृपाशंकर गोस्वामी
6. प्रयोजनमूलक हिंदी और कार्यालयी हिंदी – कृष्णकुमार गोस्वामी
7. राजभाषा सहायिका– अवधेश मोहन गुप्त
8. सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग – गोपीनाथ श्रीवास्तव
9. प्रामाणिक आलेखन एवं टिप्पण – प्रो. विराज
10. प्रयोजनमूलक हिंदी – ओमप्रकाश सिंहल

***

एम. ए. (प्रयोजनमूलक हिंदी) द्वितीय वर्ष
तृतीय अयन
Level : 6.5

PH- 20 भाषा शिक्षण श्रेयांक–4

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. भाषा शिक्षण की आवश्यकता एवं महत्व से अवगत कराना।
2. भाषा शिक्षण का स्वरूप तथा विविध प्रणालियों से परिचित कराना।
3. भाषा शिक्षण में सहायक साधनों का परिचय देना।
4. भाषा शिक्षण के द्वारा संवाद कौशल विकसित करने में सहायता करना।
5. भाषा शिक्षण और रोजगार के क्षेत्रों से परिचित कराना।

अध्यापन पद्धति :

● व्याख्यान पद्धति ● विश्लेषण पद्धति ● समूह चर्चा

पाठ्यक्रम :

इकाई– I भाषा शिक्षण: स्वरूप और उद्देश्य

भाषा शिक्षण के संदर्भ में भाषा के प्रकार : मातृभाषा

द्वितीय भाषा : भाषा शिक्षण की प्रक्रिया

विदेशी भाषा : भाषा शिक्षण की प्रक्रिया

माध्यम के रूप में भाषा।

इकाई– II भाषा कौशल और विकास : श्रवण, भाषण, वाचन तथा लेखन

कौशलों का स्वरूप और योग्यता प्राप्ति के विविध सोपान।

इकाई– III भाषा शिक्षण की प्रणालियाँ : व्याकरण अनुवाद प्रणाली, प्रत्यक्ष प्रणाली, संप्रेषणपरक प्रणाली, संरचनात्मक प्रणाली

भाषा परीक्षण एवं मूल्यांकन : स्वरूप उद्देश्य और विधियाँ ।

इकाई– IV भाषा शिक्षण में उपयोगी साधन सामग्री

कक्षा में प्राप्त सामग्री : नक्शे, चार्ट, मॉडल, चित्र आदि।

वाचन सामग्री: पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाएँ, कोश आदि।

अनौपचारिक साधन : आकाशवाणी, चलचित्र, दूरदर्शन आदि।

मल्टीमीडिया सामग्री, कंप्यूटर और भाषा शिक्षण

पाठ नियोजन : सिद्धांत और प्रक्रिया

पाठ नियोजन की आवश्यकता, पाठ नियोजन की तकनीक, पाठ–योजना ।

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. प्रस्तुत पाठयक्रम का अध्ययन करने के पश्चात छात्र भाषा शिक्षण की आवश्यकता को जान पाएंगे।
2. भाषा शिक्षण की प्रक्रिया एवं प्रविधि से अवगत होंगे।
3. छात्रों का भाषा संवाद कौशल विकसित होगा।
4. भाषा शिक्षण में उपयोगी साधन–सामग्री से परिचित होंगे।
5. भाषा के मानक रूप, शब्द उच्चारण, शब्द संपदा आदि का परिचय प्राप्त करेंगे।

पाठ्यक्रम अंक विभाजन :

आंतरिक मूल्यांकन : 50

अयनांत परीक्षा : 50

कुल अंक : 100

संदर्भ ग्रंथ :

1. अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान : सिद्धांत और प्रयोग – रवींद्रनाथ श्रीवास्तव
2. हिंदी भाषा : स्वरूप और विकास – कैलाशचंद्र भाटिया
3. हिंदी शिक्षण – मनोरमा शर्मा
4. हिंदी भाषा शिक्षण – भोलानाथ तिवारी, कैलाश भाटिया
5. भाषा शिक्षण – डॉ. रविंद्रनाथ श्रीवास्तव
6. प्रयोजनमूलक हिंदी व्याकरण – रविंद्रनाथ श्रीवास्तव, शारदा भसीन
7. हिंदी शिक्षण – उषा सिंहल
8. हिंदी शिक्षण : अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य – सं. सतीशकुमार मेहरा, सूरजभान सिंह
9. भाषा एवं भाषा शिक्षण (भाग 1,2,3) – रमाकांत अग्निहोत्री
10. हिंदी शिक्षण – केशव प्रसाद

***

एम. ए. (प्रयोजनमूलक हिंदी) द्वितीय वर्ष
तृतीय अयन
Level : 6.5

PH - 21 भाषा – प्रौद्योगिकी और हिंदी श्रेयांक–4

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. छात्रों को भाषा– प्रौद्योगिकी की अवधारणा और स्वरूप से अवगत कराना।
2. वर्तमान में वैश्विक स्तर पर भाषा प्रौद्योगिकी का महत्व तथा उपयोगिता से परिचित कराना।
3. हिंदी भाषा के तकनीकीकरण के सैद्धांतिक आधारों का परिचय देना।
4. भाषा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उपलब्ध यांत्रिक सुविधाओं से अवगत कराना।
5. भाषा प्रौद्योगिकी के अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप का परिचय देते हुए हिंदी–भाषा प्रौद्योगिकी की प्रयुक्तियों से अवगत कराना।

अध्यापन पद्धति :

- व्याख्यान पद्धति
- विश्लेषण पद्धति
- समूह चर्चा

पाठ्यक्रम :

इकाई– I भाषा–प्रौद्यौगिकी : संकल्पना और स्वरूप

भाषा–प्रौद्योगिकी का व्यवहार – क्षेत्र

इकाई– II हिंदी तकनीकीकरण के सैद्धांतिक आधार

हिंदी भाषा के प्रौद्योगिकी आयाम

इकाई– III हिंदी में उपलब्ध यांत्रिक सुविधाओं की समीक्षा

कंप्यूटरसाधित हिंदी शिक्षण के विविध आयाम : (क) निम्न स्तर (ख) उच्च स्तर

इकाई– IV भाषा–प्रौद्योगिकी का अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप एवं हिंदी भाषा–प्रौद्योगिकी

हिंदी भाषा– प्रौद्योगिकी : उपलब्धि, मर्यादा एवं संभावना

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. **प्रस्तुत पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात छात्र भाषा प्रौद्योगिकी की अवधारणा एवं स्वरूप से अवगत होंगे।**
2. **भाषा प्रौद्योगिकी के व्यवहार क्षेत्र से परिचित होंगे।**
3. **भाषा प्रौद्योगिकी में उपलब्ध यांत्रिक सुविधाएं, सॉफ्टवेअर, नव तकनीक से अवगत होंगे।**
4. **भाषा प्रौद्योगिकी के अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप को जान पाएंगे।**
5. **भाषा प्रौद्योगिकी की वर्तमान उपलब्धियाँ, आवश्यकता, चुनौतियाँ एवं संभावनाओं से अवगत होंगे।**

पाठ्यक्रम अंक विभाजन :

आंतरिक मूल्यांकन : 50

अयनांत परीक्षा : 50

कुल अंक : 100

संदर्भ ग्रंथ :

1. **हिंदी भाषा और सूचना प्रौद्योगिकी – डॉ. दीपक तुपे**
2. **भाषा और प्रौद्योगिकी – डॉ. विनोदकुमार प्रसाद**
3. **भाषा प्रौद्योगिकी और प्रयोजनमूलक हिंदी – प्रो. सुधा बालकृष्ण, प्रो. प्रमोद कोवप्रत**
4. **हिंदी भाषा और तकनीक – डॉ. स्नेहलता, उमा चौधरी**
5. **सूचना प्रौद्योगिकी के दौर में करियर – विनीत सिंहल**
6. **भाषा प्रौद्योगिकी एवं भाषा प्रबंधन – सूर्यप्रकाश दीक्षित**
7. **भाषा अनुवाद और प्रौद्योगिकी – सं. मेघा आचार्य**
8. **आधुनिक जनसंचार और हिंदी – प्रो. हरिमोहन**
9. **हिंदी कम्प्यूटरीकरण – डॉ. एहतिशाम अजीज**
10. **हिंदी वेब साहित्य – डॉ. सुनीलकुमार लवटे**

***

एम. ए. (प्रयोजनमूलक हिंदी) द्वितीय वर्ष
तृतीय अयन
Level : 6.5

PH : 22 मशीनी अनुवाद श्रेयांक–2

पाठ्यक्रम का उद्देश्य :

1. अनुवाद के क्षेत्र में मशीनी अनुवाद की अवधारणा से अवगत कराना।
2. मशीनी अनुवाद का आरंभ और उसकी विकास यात्रा से परिचित कराना।
3. मशीनी अनुवाद की कार्य पद्धति तथा प्रयोग के क्षेत्र से अवगत कराना।
4. छात्रों का मशीनी अनुवाद कौशल विकसित कराना।
5. मशीनी अनुवाद कार्य की प्रमुख समस्याएं तथा विविध सॉफ्टवेअर से परिचित कराना।

अध्यापन पध्दति :

● व्याख्यान पद्धति ● प्रात्यक्षिक पद्धति ● विश्लेषण पद्धति

पाठ्यविषयः

इकाई– I मशीनी अनुवाद की अवधारणा और स्वरूप, मशीनी अनुवाद : आरंभ और विकास।

मशीनी अनुवाद की आवश्यकता एवं महत्व, मशीनी अनुवाद की कार्यपद्धति, प्रकार एवं प्रयोग क्षेत्र।

इकाई– II मशीनी अनुवाद कार्य में सहायक प्रमुख सॉफ्टवेअर निर्माण संस्थाएँ तथा मशीनी अनुवाद की प्रक्रिया।

मशीनी अनुवाद सामग्री का मूल्यांकन, पुनरीक्षण

मशीनी अनुवाद के प्रयोग की संहिता, कानून।

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात छात्र मशीनी अनुवाद की अवधारणा और स्वरूप से परिचित होंगे।
2. मशीनी अनुवाद का आरंभ, विकास और वर्तमान स्थिति से अवगत होंगे।

3. **मशीनी अनुवाद का कौशल प्राप्त करेंगे।**
4. **मशीनी अनुवाद के लिए सहायक संसाधनों से परिचित होंगे।**
5. **मशीनी अनुवाद की मूल्यांकन पद्धति से अवगत होंगे। मशीनी अनुवाद की संहिता का परिचय प्राप्त करेंगे।**

पाठ्यक्रम अंक विभाजन :

आंतरिक मूल्यांकन : 50

अयनांत परीक्षा : 50

कुल अंक : 100

संदर्भ ग्रंथ :

1. **अनुवाद विज्ञान की भूमिका – कृष्णकुमार गोस्वामी**
2. **कंप्यूटर अनुवाद – सं. पूरनचंद टंडन**
3. **ई– अनुवाद और हिंदी – हरिशकुमार सेठी**
4. **कंप्यूटर अनुवाद (विशेषांक), भारतीय अनुवाद परिषद, नई दिल्ली**
5. **सूचना प्राद्यौगिकी और हिंदी अनुवाद (विशोषांक), भारतीय अनुवाद परिषद, नई दिल्ली**
6. **मशीनी अनुवाद : विधियाँ एवं प्रविधियाँ – महेंद्र ठाकूरदास, अनुवाद अंक** 129**, भारतीय अनुवाद परिषद, नई दिल्ली**
7. Machine Translation : An Introductory Guide-Arrold D. L., Balkar R.
8. Machine Translation : Past, Present, Future-Hutchins W., Johnf Harold
9. Computers and Translation : A Translator's Guide-Somers Harold
10. Translation Engines : Techniques for Machine Translation – Trujillo Arturd

***

एम. ए. (प्रयोजनमूलक हिंदी) द्वितीय वर्ष
तृतीय अयन
Level : 6.5

PH- 23 लोक साहित्य (वैकल्पिक) श्रेयांक–4

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. लोकसाहित्य के स्वरूप एवं उसके अध्ययन के महत्व से परिचित कराना।
2. लोकसाहित्य की विभिन्न विधाओं के अध्ययन द्वारा लोकजीवन में उसकी व्यापकता समझाना।
3. लोकसाहित्य का महत्व समझाकर उसके विशेष अध्ययन के लिए प्रेरणा देना।
4. महाराष्ट्र के लोकसाहित्य से परिचित कराना।
5. लोक साहित्य में रचित विभिन्न विधाओं का परिचय करवाना।

अध्यापन पद्धति :

- व्याख्यान पद्धति
- विश्लेषण पद्धति
- समूह चर्चा

पाठ्यक्रम :

इकाई– I 'लोक' शब्द की व्युत्पत्ति, अर्थ एवं स्वरूप विवेचन, लोकसाहित्य का स्वरूप, परिभाषाएँ एवं विशेषताएँ– लोकसाहित्य और शिष्टसाहित्य में साम्य–भेद।

इकाई– II लोकवार्ता और लोकगीत : लोकवार्ता– परिभाषा एवं स्वरूप विवेचनं, लोकवार्ता और लोकसाहित्य का संबंध, लोकवार्ता–विश्लेषण के आधार और पद्धतियाँ, लोकगीत– महत्व और उपयोगिता, लोकगीतों के वर्गीकरण की पद्धतियाँ एवं विशेषताएँ।

इकाई– III लोकसाहित्य का महत्व: सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, भाषाशास्त्रीय दृष्टियों से।

इकाई– IV लोकसाहित्य और ज्ञानशाखाओं का परस्पर संबंध : इतिहास, समाजविज्ञान, मनोविज्ञान, भाषाविज्ञान, धर्मशास्त्र, शिष्टसाहित्य।

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. विद्यार्थी अपने लोकसाहित्य से अपना जुड़ाव महसूस कर पाएँगे। अपनी जड़ों और लोकसंस्कृति के प्रति संवेदनात्मक दृष्टि विकसित कर पाएंगे।
2. विद्यार्थी लोकरीतियाँ लोकगीतों के माध्यम से भारतीय लोकसंस्कृति की परंपरा और विशेषताओं को आत्मसात कर पाएँगे।
3. लोकसाहित्य की दृष्टि से परिचित हो सकेंगे।
4. अपने समय के परिप्रेक्ष्य में लोकसाहित्य की प्रासंगिकता समझ पाएँगे।
5. लोक साहित्य के संवर्धन एवं सृजन में अपनी भूमिका पाएंगे।

पाठ्यक्रम अंक विभाजन :

आंतरिक मूल्यांकन : 50

अयनांत परीक्षा : 50

कुल अंक : 100

संदर्भ ग्रंथ :

1. भारतीय लोकसाहित्य – डॉ. श्याम परमार
2. लोकसाहित्य की भूमिका – डॉ. उपाध्याय
3. लोकसाहित्य सिद्धांत और प्रयोग – डॉ. श्रीराम शर्मा
4. लोकसाहित्य के प्रतिमान – डॉ. कुंदनलाल उप्रैति
5. खडीबोली का लोकसाहित्य – डॉ. सत्यगुप्त
6. लोकसाहित्य विज्ञान – डॉ. सत्येंद्र
7. लोकवार्ता और लोकगीत – डॉ. सत्येंद्र
8. लोकसाहित्य का अध्ययन – डॉ. त्रिलोचन पाण्डेय
9. महाराष्ट्र का हिंदी लोकनाट्य – डॉ. कृष्ण दिवाकर
10. महाराष्ट्र का लोकधर्मी नाट्य – डॉ. दुर्गा दीक्षित

***

एम. ए. (प्रयोजनमूलक हिंदी) द्वितीय वर्ष
तृतीय अयन
Level : 6.5

PH- 24 हिंदी साहित्य और सिनेमा (वैकल्पिक) श्रेयांक–4

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. भारतीय हिंदी सिनेमा की विकास यात्रा से परिचित कराना।
2. सिनेमा और साहित्य के अंतर्संबंध से अवगत कराना।
3. साहित्यिक रचनाओं के फिल्मांतरण की तकनीक से परिचित कराना।
4. सिनेमा में अभिव्यक्त विविध समस्याओं की जानकारी देना।
5. पटकथा लेखन कौशल से अवगत कराना।

अध्यापन पद्धति :

- व्याख्यान पद्धति
- विश्लेषण पद्धति
- सिनेमा अवलोकन

पाठ्यक्रम :

इकाई– I हिंदी सिनेमा का संक्षिप्त इतिहास
प्रारंभिक दौर का सिनेमा
स्वतंत्रता आंदोलन और सिनेमा
बाल सिनेमा
सिनेमा में भारतीय समाज का यथार्थ

इकाई– II सिनेमा का तकनीकी पक्ष
सिनेमा निर्माण प्रक्रिया
सिनेमा सृजन की सामूहिकता
पटकथा
छायांकन
सिने संगीत

इकाई– III साहित्य और सिनेमा का अंत:संबंध
संवेदना का रुपांतरण और तकनीक
निर्देशन
अभिनय और संपादन
सेंसर बोर्ड
सिनेमा का वितरण और व्यवसाय

इकाई– IV हिंदी साहित्य और सिनेमा

सिनेमा : समीक्षा
राजा हरिश्चंद्र, देवदास
तीसरी कसम, तारे जमी पर, थ्री इडियट्स, मैरी कॉम

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात छात्र हिंदी सिनेमा के इतिहास से अवगत होंगे।
2. सिनेमा के सामजिक सरोकार का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
3. अभिनय कौशल, सिनेमा लेखन कौशल आदि से परिचित होंगे।
4. सिनेमा के क्षेत्र में रोजगार के अवसर को समझ पाएंगे।
5. सिनेमा समीक्षा का कौशल अवगत करेंगे।

पाठ्यक्रम अंक विभाजन :

आंतरिक मूल्यांकन : 50
अयनांत परीक्षा : 50
कुल अंक : 100

संदर्भ ग्रंथ :

1. सिनेमा : कल आज और कल – विनोद भारद्वाज
2. फिल्म निर्देशन – कुलदीप सिन्हा
3. सिनेमा और संस्कृति – राही मासूम रजा
4. टॉकीज सिनेमा का सफर – अजय ब्रम्हात्मज
5. हिंदी सिनेमा का समकाल – सी. भास्कर राव
6. हिंदी सिनेमा में साहित्यिक विमर्श – डॉ. रमा
7. हिंदी सिनेमा का इतिहास – संजीव श्रीवास्तव
8. हिंदी साहित्य सिनेमा और फिल्मांकन – डॉ. इसपाक अली
9. भारतीय सिनेमा – महेंद्र मिश्र
10. सिनेमा तकनीकी ज्ञान – चंदनसिंह राठौड

***

एम. ए. (प्रयोजनमूलक हिंदी) द्वितीय वर्ष
तृतीय अयन
Level : 6.5

PH- 25 प्रवासी साहित्य (वैकल्पिक) श्रेयांक–4

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. प्रवासी साहित्य से परिचित कराना।
2. विदेशों में हिंदी भाषा की स्थिति से अवगत कराना।
3. प्रवासी भारतियों के सामाजिक, सांस्कृतिक संघर्ष से परिचित कराना।
4. प्रवासी एवं अप्रवासी साहित्य के अंतर को स्पष्ट कराना।
5. प्रवासी साहित्य में निहित भारतीय जीवनमूल्यों से परिचित कराना।

अध्यापन पद्धति :

- व्याख्यान पद्धति
- विश्लेषण पद्धति
- समूह चर्चा

पाठ्यक्रम :

इकाई– I प्रवासी साहित्य : अवधारणा एवं स्वरूप
प्रवासी साहित्य का विकासक्रम
प्रवासी साहित्य की विशेषताएँ

इकाई– II उपन्यास साहित्य : आलोचनात्मक अध्ययन
लाल पसीना – अभिमन्यु अनत

इकाई– III कहानी साहित्य :
देह की कीमत – तेजेंद्र वर्मा
आखिरी गीत – नीना पॉल
गुनहगार – सुषम बेदी
थोड़ी देर और – शैलजा सक्सेना
मेरे अपने– उषा राजे सक्सेना

इकाई– IV कविता
हाशिये पर – पूर्णिमा वर्मन
अच्छा लगता है – सुधा ओम ढींगरा

प्रवासी वेदना – शशि पाधा
आस्था का उजाला – पुष्पिता अवस्थी
अहंकार – सुदर्शन प्रियदर्शिनी

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. प्रस्तुत पाठयक्रम का अध्ययन करने के पश्चात छात्र प्रवासी साहित्य का स्वरूप और मुख्य प्रवृत्तियों से परिचित होंगे।
2. विश्व के अनेक देशों में प्रवासी लेखकों द्वारा निर्मित साहित्य के विभिन्न संदर्भों से अवगत होंगे।
3. प्रवासी कथासाहित्य में अभिव्यक्त भारतीय सभ्यता, संस्कृति तथा परंपरा से अवगत होंगे।
4. भारतीय संस्कृति, राष्ट्रवाद तथा प्राचीन परंपरा को निदेशों में प्रसारित करने की प्रवासी साहित्यकारों की भूमिका को समझ पाएंगे।
5. प्रवासी साहित्य के समग्र इतिहास से परिचित होंगे।

पाठ्यक्रम अंक विभाजन :

आंतरिक मूल्यांकन : 50
अयनांत परीक्षा : 50
कुल अंक : 100

संदर्भ ग्रंथ :

1. प्रवासी लेखन : नयी जमीन नया आसमान – अनिल जोशी
2. हिंदी का प्रवासी साहित्य : कमल किशोर गोयनका
3. विदेशों में हिंदी – इंद्रदेव भोला
4. फ़िजी में प्रवासी भारतीय – जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी
5. ब्रिटेन में हिंदी – उषा राजे सक्सेना
6. फ़िजी का सृजनात्मक साहित्य – विमलेश कांति वर्मा
7. प्रवासी हिंदी कहानी : एक अंतर्यात्रा – सं सुषमा आर्य
8. लाल पसीना – अभिमन्यू अनत
9. पथरीला सीना – रामदेव धुरंधर
10. देह की कीमत – तेजेंद्र शर्मा

***

एम. ए. (प्रयोजनमूलक हिंदी) द्वितीय वर्ष
तृतीय अयन
Level : 6.5

PH- 26 विशेष रचनाकार : डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे (अनुवादक), (वैकल्पिक) श्रेयांक–4

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के द्वारा छात्रों को हिंदीत्तर भाषी अनुवादक डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे के जीवन तथा साहित्यिक कार्य से अवगत कराना।
2. रचनाकार/अनुवादक की हिंदी के प्रचार–प्रसार के प्रति सेवा से अवगत कराना।
3. डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे के अनुवाद कौशल से अवगत कराना।
4. डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे द्वारा अनुदित रचनाओं का परिचय करवाना।
5. प्रस्तुत पाठ्यक्रम द्वारा अनुवादक और अनुवाद का महत्व प्रतिपादित कराना।

अध्यापन पद्धति :

- व्याख्यान पद्धति
- विश्लेषण पद्धति
- साक्षात्कार

पाठ्यक्रम :

इकाई– I	डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे : जीवन परिचय
	डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे : रचनाकर्म
इकाई– II	डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे : हिंदी के प्रचार–प्रसार में योगदान
	डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे : की साहित्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ
इकाई– III	डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे और उनका अनुवाद कार्य
	डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे की अनुवाद विषयक अवधारणा
इकाई– IV	डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे द्वारा अनुदित रचनाओं का परिचय
	डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे द्वारा संपन्न अनुवाद कार्य का मूल्यांकन

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. रचनाकार/अनुवादक का जीवन तथा साहित्यिक परिचय प्राप्त करेंगे।
2. अनुवाद डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे के अनुवाद कार्य से अवगत होंगे।
3. हिंदी साहित्य, अनुवाद तथा भाषा के प्रचार–प्रसार के योगदान को जान पाएंगे।
4. अनुवाद कार्य तथा उनकी अनुवाद विषयक अवधारणा से अवगत होंगे।
5. हिंदीत्तर भाषी अनुवादकों की अनुवाद कार्य की चुनौतियों को जान पाएंगे।

पाठ्यक्रम अंक विभाजन :

आंतरिक मूल्यांकन : 50

अयनांत परीक्षा : 50

कुल अंक : 100

संदर्भ ग्रंथ :

1. डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे : व्यक्तित्व एवं कृतित्व – डॉ. मजीद शेख
2. http://drsmramsabhe.blogspot.com
3. http://marathivishwakosh.org
4. कहानी भारतीय संस्कृति की – डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे
5. शब्द संस्कृति के मेले में – डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे
6. अनुवाद का समाजशास्त्र – डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे
7. समाज परिवर्तन की दिशाएँ – अनु. सूर्यनारायण रणसुभे
8. यादों के पंछी – प्र इ. सोनकांबळे – अनु. सूर्यनारायण रणसुभे
9. अक्करमाशी – शरणकुमार लिंबाळे – अनु. सूर्यनारायण रणसुभे
10. उठाईगीर – लक्ष्मण गायकवाड – अनु. सूर्यनारायण रणसुभे

***

एम. ए. (प्रयोजनमूलक हिंदी) द्वितीय वर्ष
तृतीय अयन
Level : 6.5

HS- 27 लघु–शोध प्रबंध लेखन (परियोजना – I) श्रेयांक–4

- **लघु–शोध प्रबंध लेखन के उद्देश्य :**
  1. छात्रों की शोध–अभिवृत्ति को विकसित कराना।
  2. अनुसंधान की तकनीक एवं प्रक्रिया से अवगत कराना।
  3. अनुसंधान का महत्व एवं उपादेयता से परिचित कराना।
  4. छात्रों का अनुसंधान कौशल विकसित कर अनुसंधान के लिए विषय चयन तथा उसकी समस्याओं के समाधान के लिए सक्षम बनाना।
  5. बृहत अनुसंधान कार्य की दिशा में छात्रों का समझ का विस्तार करना।
- **लघु–शोध प्रबंध लेखन का स्वरूप :**
  - विषय चयन एवं शीर्षक, प्रमाणपत्र और घोषणा
  - अनुक्रमणिका
  - अध्याय विभाजन
  - विषय एवं शीर्षकानुरूप शोध–विवेचन
  - आवश्यक संदर्भ एवं शोध प्रविधियों का प्रयोग
  - उपसंहार एवं संदर्भ ग्रंथ सूची
- **लघु–शोध प्रबंध लेखन संबंधी आवश्यक निर्देश :**
  1) छात्र शोध–निर्देशक के साथ चर्चा कर शोध–विषय निश्चित कर सकेंगे।
  2) छात्र साहित्य की किसी भी विधा पर लघु–शोध प्रबंध तैयार कर सकेंगे।
  3) छात्र को लघु–शोध प्रबंध का कार्य नियत अवधि में पूरा कर संबंधित शोध–निर्देशक के पास जमा करना होगा।
  4) छात्र को लघु–शोध प्रबंध के सभी मानको का अनुपालन करते हुए पूरा करना होगा।

5) **लघु–शोध प्रबंध का विस्तार लग–भग** 50-75 **पृष्ठों में हो।**

6) **लघु–शोध प्रबंध पूरा होने के पश्चात उसकी प्रस्तुति पी.पी.टी. द्वारा कर मौखिकी देनी होगी।**

7) **शोध–निर्देशक के लिए समान अनुपात में छात्रों का आबंटन होगा।**

8) **पी.पी.टी. और मौखिकी मूल्यांकन अंतर्गत परिक्षक तथा बाह्य परिक्षक करेंगे।**

- **लघु–शोध प्रबंध का मूल्यांकन :**

1) **लघु–शोध प्रबंध का मूल्यांकन शोध–निर्देशक द्वारा किया जाएगा।**

2) **पॉवर पाइंट प्रजेंटेशन तथा मौखिकी के लिए शोध–निर्देशक अंतर्गत परिक्षक एवं बाह्य परिक्षक इन तीन सदस्यों का पैनल होगा।**

3) **पी.पी.टी. और मौखिकी का मूल्यांकन अंतर्गत परिक्षक तथा बाह्य परिक्षक करेंगे।**

- **लघु–शोध प्रबंध अंक विभाजन :**

लघु–शोध प्रबंध लेखन	**पॉवर पॉइंट प्रजेंटेशन**	**मौखिकी**	**कुल अंक**
50	20	30	100

- **लघु–शोध प्रबंध की उपादेयता :**

1) **छात्र अनुसंधान कौशल तथा उसके महत्व से अवगत होंगे।**

2) **अनुसंधान की प्रविधि एवं प्रक्रिया से परिचित होंगे।**

3) **अनुसंधान की विविध प्रविधियों का परिचय प्राप्त करेंगे।**

4) **समस्या का चयन, समस्या का समाधान तथा नए निष्कर्ष स्थापित कर सकेंगे।**

5) **शोध–सार, संदर्भ, आधार ग्रंथ, सहायक ग्रंथ, शोध के लिए उपयोगी साधनों से परिचित होंगे।**

***

एम. ए. (प्रयोजनमूलक हिंदी) द्वितीय वर्ष
चतुर्थ अयन
Level : 6.5

PH- 28 रेडियो लेखन और प्रस्तुति श्रेयांक–4

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

6. श्रव्य माध्यम के रूप में रेडियो से परिचित कराना।
7. रेडियो कार्यक्रमों का स्वरूप एवं व्याप्ति का परिचय देना।
8. रेडियो रूपकों की विधि–समझाना।
9. रेडियो समाचार और विज्ञापन का परिचय देना।
10. रेडियो संबंधी प्रायोगिक ज्ञान देना।

अध्यापन पद्धति :

- व्याख्यान पद्धति
- विश्लेषण पद्धति
- क्षेत्रीय भेंट

पाठ्यक्रम :

इकाई– I भारत में रेडियो सेवा का आरंभ और विकास का परिचय

रेडियो द्वारा प्रसारित होनेवाले कार्यक्रमों का स्वरूप एवं विशेषताएँ

रेडियो कार्यक्रमों के मुख्य उद्देश्य एवं उपलब्धियाँ, भारत में रेडियों सेवाओं के विभिन्न केंद्र

इकाई– II आकाशवाणी रूपक का परिचय

रूपक प्रारूप, रूपकों का वर्गीकरण, रूपक– लेखन शैली

रूपक– निर्माण की प्रक्रिया (शीर्षक, संपादन, अवधि, स्वर, ध्वनि एवं संगीत)

रेडियो नाटक :

नाटक और रेडियो नाटक

रेडियो नाटक के तत्व, विशेषताएँ, निर्माण तकनीक

रेडियो नाटक के प्रकार (झलकी, फॅन्टसी, एक पात्री (मोनोलॉग) संगीत व काव्यनाटक, प्रहसन, रूपांतरण।

इकाई– III रेडियो– विज्ञापन : स्वरूप, विकास एवं महत्व

विज्ञापन के प्रकार

रेडियो विज्ञापन की शैली एवं विशेषताएँ

आचार संहिता, निर्माण प्रक्रिया

आकाशवाणी समाचार : आशय, स्वरूप और स्रोत (एजेन्सियाँ)

रेडियो समाचार लेखन, संपादन, संगठनात्मक स्वरूप, आचार संहिता।

इकाई– IV प्रायोगिक आवाज (Voice) : स्वरूप एवं विशेषताएँ

आवाज के मूलतत्व (Speech Personality)

आवाज़ की समस्याएँ, प्रस्तोता के लिए आवश्यक कार्य

निर्देश–पढ़ने और बोलने का अंतर, प्रस्तुतिकरण की तकनीक

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

6. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात छात्र रेडियो सेवा के इतिहास से अवगत होंगे।
7. रेडियो द्वारा प्रसारित होनेवाले विविध कार्यक्रम का परिचय प्राप्त करेंगे।
8. रेडियो कार्यक्रमों का स्वरूप एवं उसकी प्रमुख विशेषताओं को समझेंगे।
9. रेडियो लेखन कौशल से अवगत होंगे।
10. रेडियो माध्यम और रोजगार के अवसरों से अवगत होंगे।

पाठ्यक्रम अंक विभाजन :

आंतरिक मूल्यांकन : 50

अयनांत परीक्षा : 50

कुल अंक : 100

संदर्भ ग्रंथ :

11. रेडियो लेखन – श्री मधुकर गंगाधर
12. हिंदी रेडियो नाटक : अद्यतन अध्ययन – डॉ. जयभगवान गुप्ता

13. **रेडियो नाटक शिल्प – डॉ. सिद्धनाथ कुमार**
14. **रेडियो नाटक – श्री हरिश्चंद्र खन्ना**
15. **रेडियो प्रसारण और उच्चारण तकनीक – खुर्शीद आलम**
16. **रेडियो प्रसारण – कौशल शर्मा**
17. **रेडियो और संगीत – डॉ. अशोक कुमार**
18. **रेडियो नाटक की कला – सिद्धनाथ कुमार**
19. **सामुदायिक रेडियो – डॉ. इंद्र प्रकाश**

***

एम. ए. (प्रयोजनमूलक हिंदी) द्वितीय वर्ष
चतुर्थ अयन
Level : 6.5

PH- 29 देवनागरी लिपि की संरचना श्रेयांक–4

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. देवनागरी लिपि और भाषा के संबंध से अवगत कराना।
2. देवनागरी लिपि की प्रमुख विशेषताओं का परिचय देना।
3. देवनागरी लिपि का इतिहास और उसकी संरचना से अवगत कराना।
4. हिंदी की मानक वर्तनी और उच्चारण प्रणाली का बोध कराना।
5. हिंदी शब्द संरचना से अवगत कराना।

अध्यापन पद्धति :

- व्याख्यान पद्धति
- विश्लेषण पद्धति
- समूह चर्चा

पाठ्यक्रम :

इकाई– I देवनागरी लिपि का स्वरूप, परिभाषाएँ, नामकरण तथा प्रमुख विशेषताएँ

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता, देवनागरी लिपि गुण–दोष, देवनागरी लिपि की सार्थकता

इकाई– II मानक हिंदी वर्णमाला तथा अंक

हिंदी वर्णमाला उच्चारण तथा लेखन विधि

हिंदी वर्तनी का मानवीकरण

इकाई– III हिंदी शब्दों का वर्गीकरण : उद्‌भव, अर्थ, प्रयोग तथा रूपांतर के आधार

हिंदी शब्द निर्माण में उपसर्ग, प्रत्यय और समास का प्रदेय, पारिभाषिक, शब्दावली निर्माण में उनका अनुप्रयोग

इकाई– IV भारतीय संविधान में देवनागरी की स्थिति

देवनागरी लिपि में सुधार के प्रयास

परिनिष्ठित देवनागरी वर्णमाला

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. देवनागरी लिपि के स्वरूप एवं प्रयोग से अवगत होंगे।
2. देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता एवं प्रमाणिकता को समझेंगे।
3. मानक वर्णमाला तथा अंको का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
4. हिंदी वर्णमाला का आदर्श उच्चारण एवं लेखन से परिचित होंगे।
5. संविधान में देवनागरी लिपि के प्रावधान को समझ पाएंगे।

पाठ्यक्रम अंक विभाजन :

आंतरिक मूल्यांकन : 50

अयनांत परीक्षा : 50

कुल अंक : 100

संदर्भ ग्रंथ :

1. देवनागरी लेखन तथा हिंदी वर्तनी – व्यवस्था – लक्ष्मीनारायण शर्मा
2. हिंदी भाषा की लिपि संरचना – डॉ. भोलानाथ तिवारी
3. नागरी लिपि का उद्‌भव और विकास – डॉ. ओमप्रकाश भाटिया
4. नागरी लिपि : रूप और सुधार – मोहन ब्रिज
5. देवनागरी लिपि – डॉ. सक्सेना
6. हिंदी व्याकरण – पं. कामताप्रसाद गुरु
7. हिंदी शब्दानुशासन – पं. किशोरीदास वाजपेयी
8. आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना – डॉ. वासुदेवनंदन प्रसाद
9. बेसिक ग्रामर ऑफ मॉडर्न हिंदी – केंद्रीय हिंदी निदेशालय
10. पारिभाषिक शब्दावली : कुछ समस्याएँ – संपा. डॉ. भोलानाथ तिवारी, डॉ. महेंद्र चतुर्वेदी

***

एम. ए. (प्रयोजनमूलक हिंदी) द्वितीय वर्ष
चतुर्थ अयन
Level : 6.5

PH- 30 माध्यम लेखन श्रेयांक–4

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. माध्यम लेखन का स्वरूप एवं उसके महत्व से अवगत कराना।
2. माध्यम लेखन विधि का परिचय कराना।
3. विभिन्न संचार माध्यमों का स्वरूप और उसकी उपयोगिता से अवगत कराना।
4. विभिन्न माध्यमों में लेखन कौशल द्वारा रोजगार प्राप्ति के अवसरों से अवगत कराना।
5. माध्यमों के लिए लेखन कौशल विकसित कराना।

अध्यापन पद्धति :

● व्याख्यान पद्धति ● विश्लेषण पद्धति ● क्षेत्रीय भेंट

पाठ्यक्रम :

इकाई– I माध्यम लेखन : अवधारणा, स्वरूप
माध्यम लेखन के प्रमुख सिद्धांत
माध्यम लेखन की प्रमुख विशेषताएँ
माध्यमों में भाषा का महत्व, भाषा की प्रकृति

इकाई– II जनसंचार के प्रमुख माध्यमों का स्वरूप एवं विविध प्रकार
मुद्रण माध्यम, दृश्य–श्रव्य माध्यम, श्रव्य माध्यम, नव आधुनिक संचार माध्यम

इकाई– III मुद्रण माध्यमों के लिए लेखन कार्य :
समाचार लेखन, विज्ञापन लेखन, अन्य लेखन
श्रव्य माध्यमों के लिए लेखन कार्य :
रेडियो समाचार लेखन, विज्ञापन लेखन
रेडियो नाटक लेखन, रेडियो फीचर लेखन

इकाई– IV दृश्य–श्रव्य माध्यम के लिए लेखन :
पटकथा लेखन, विज्ञापन लेखन

नव आधुनिक माध्यमों के लिए लेखन :

ब्लॉग लेखन, ई–पत्रिकाएँ, ई– सिनेमा

ई–विज्ञापन, आदि।

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. माध्यम लेखन का स्वरूप और प्रकारों से परिचित होंगे।
2. माध्यम लेखन के कौशल को अवगत करेंगे।
3. विभिन्न जनसंचार माध्यमों का परिचय प्राप्त करेंगे।
4. माध्यम लेखन में भाषा के महत्व से अवगत होंगे।
5. माध्यम लेखन कौशल पर आधारित रोजगार के अवसरों को जान पाएंगे।

पाठ्यक्रम अंक विभाजन :

आंतरिक मूल्यांकन : 50

अयनांत परीक्षा : 50

कुल अंक : 100

संदर्भ ग्रंथ :

1. उत्तर आधुनिक मीडिया तकनीक – हर्षदेव
2. जनसंचार – सं. राधेश्याम शर्मा
3. भाषा – प्रौद्योगिकी एवं भाषा प्रबंधन – सूर्यप्रकाश दीक्षित
4. मीडिया का बदलता चरित्र – हिमांशू शेखर
5. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया : बदलते आयाम – डॉ. स्मिता मिश्र, डॉ. अमरनाथ 'अमर'
6. मीडिया लेखन : सिद्धांत और व्यवहार – डॉ. चंद्रप्रकाश मिश्र
7. पटकथा लेखन : एवं परिचय – मनोहर श्याम जोशी
8. टेलीविजन लेखन – असगर वजाहत
9. रेडियो नाटक की कला – सिद्धनाथ कुमार
10. दृश्य–श्रव्य एवं जनसंचार माध्यम – कृष्णकुमार रत्तु

***

एम. ए. (प्रयोजनमूलक हिंदी) द्वितीय वर्ष
चतुर्थ अयन
Level : 6.5

PH- 31 सोशल मीडिया और हिंदी (वैकल्पिक) श्रेयांक–4

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. सोशल मीडिया के विकास और महत्व से परिचित कराना।
2. सोशल मीडिया के विभिन्न प्रकारों का परिचय देना।
3. सोशल मीडिया का सकारात्मक उपयोग करने हेतु मार्गदर्शन करना।
4. सोशल मीडिया लेखन में भागीदारी हेतु सक्षम बनाना।
5. ब्लॉग लेखन हेतु छात्रों को प्रेरित करना।

अध्यापन पद्धति :

- व्याख्यान पद्धति
- विश्लेषण पद्धति
- समूह चर्चा

पाठ्यक्रम :

इकाई– I सोशल मीडिया : संकल्पना एवं स्वरूप
सोशल मीडिया की विकास यात्रा
लोकतंत्र में सोशल मीडिया की भूमिका
डिजिटल साक्षरता

इकाई– II सोशल मीडिया के प्रकार
फेसबुक, व्हाट्सएप, ब्लॉग, यूट्यूब, ट्विटर, इन्स्टाग्राम
सोशल मीडिया की भाषा
सोशल मीडिया और मनोविज्ञान

इकाई– III ब्लॉग लेखन का इतिहास
ब्लॉग लेखन की भाषा
ब्लॉग लेखन की प्रक्रिया

इकाई– IV सोशल मीडिया का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक प्रभाव
जन–आंदोलनों में सोशल मीडिया की भूमिका
हिंदी के प्रचार–प्रसार में सोशल मीडिया की भूमिका

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. **प्रस्तुत पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात छात्र सोशल मीडिया का उद्भव, विकास तथा प्रकारों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।**
2. **लोकतंत्र में मीडिया के महत्व को समझ पाएंगे।**
3. **सोशल मीडिया की उपयोगिता तथा उसके नकारात्मक प्रभावों से परिचित होंगे।**
4. **सोशल मीडिया लेखन कौशल से अवगत होंगे।**
5. **सोशल मीडिया के प्रयोग संबंधी अतिरिक्त ज्ञान प्राप्त करेंगे।**

पाठ्यक्रम अंक विभाजन :

आंतरिक मूल्यांकन : 50

अयनांत परीक्षा : 50

कुलअंक : 100

संदर्भ ग्रंथ :

1. **मीडिया का वर्त्तमान – सं. अकबर रिज़वी**
2. **मीडिया की बदलती भाषा – अजय कुमार सिंह**
3. **नए जनसंचार माध्यम और हिंदी – सुधीश पचौरी**
4. **मीडिया : समकालीन संस्कृति विमर्श – सुधीश पचौरी**
5. **मास मीडिया और समाज – मनोहर श्याम जोशी**
6. **मीडिया और लोकतंत्र – प्रो. रविंद्रनाथ मिश्र**
7. **सोशल मीडिया की राजनीति – सर्वेश्वरकुमार मौर्य, आनंद पांडे**
8. **मीडिया, साहित्य और संस्कृति – माधव हाडा**
9. **मीडिया, बाजार और लोकतंत्र – सं पंकज बिष्टा**
10. **आधुनिक विज्ञान और जनसंपर्क – डॉ. यू. सी. गुप्ता**

***

एम. ए. (प्रयोजनमूलक हिंदी) द्वितीय वर्ष
चतुर्थ अयन
Level : 6.5

PH- 32 हिंदी साहित्य और पर्यावरण (वैकल्पिक) श्रेयांक–4

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. छात्रों में पर्यावरणीय चेतना के प्रति जागरूक करना।
2. साहित्य और पर्यावरण के संबंधों को समझाना।
3. प्रकृति और मानव मूल्यों की साझी परंपरा से अवगत कराना।
4. पर्यावरण का मानव समाज के आर्थिक–सामाजिक पक्ष पर पड़ते प्रभाव का साहित्यिक व आलोचनात्मक अध्ययन कराना।
5. साहित्य और पर्यावरण के अंत:संबंध से अवगत कराना।

अध्यापन पद्धति :

- व्याख्यान पद्धति
- विश्लेषण पद्धति
- क्षेत्रीय भेंट

पाठ्यक्रम :

इकाई– I पर्यावरण सामान्य परिचय

पूर्व मध्यकाल के साहित्य में पर्यावरणीय बोध, तुलसी और जायसी की रचनाओं में पर्यावरणीय चेतना

षड़ऋतु और बारहमासा सामान्य परिचय

उत्तर मध्यकाल में पर्यावरणीय बोध, मतिराम और सेनापति की रचनाओं में पर्यावरणीय चेतना

इकाई– II भारतेन्दु युगीन साहित्य में पर्यावरणीय बोध, भारतेन्दु और ठाकुर जगमोहन की रचनाओं में पर्यावरणीय चेतना

द्विवेदी युगीन साहित्य में पर्यावरणीय बोध, मैथलीशरण गुप्त, पंडित लोचन प्रसाद पाण्डेय

इकाई– III छायावाद में चित्रित पर्यावरणीय बोध, महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पंत और

जयशंकर प्रसाद (कामायनी) के रचनाओं में प्रकृति चित्रण

छायावादोत्तर युग में पर्यावरणीय चेतना, नागार्जुन और केदारनाथ अग्रवाल (फूल नहीं रंग बोलते हैं) की कविताओं में पर्यावरणीय चेतना

इकाई– IV समकालीन साहित्य की विविध विधाओं में पर्यावरणीय बोध

निबंध, रिपोर्ताज, कविता, यात्रा साहित्य, उपन्यास, अब भी खरे हैं तालाब (अनुपम मिश्र)

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. उपरोक्त पाठ्यक्रम से छात्रों में पर्यावरण संबंधी तथ्यों पर विमर्श हो सकेगा।
2. इससे पर्यावरणीय सामाजिक दायित्यों का बोध होगा।
3. साहित्य और पर्यावरण के अंतर्संबंधों की समझ उत्पन्न होगी।
4. पर्यावरण के आर्थिक, सामाजिक पक्षों की समझ उत्पन्न होगी
5. पर्यावरण संवर्धन की चेतना का विकास होगा।

पाठ्यक्रम अंक विभाजन :

आंतरिक मूल्यांकन : 50

अयनांत परीक्षा : 50

कुल अंक : 100

संदर्भ ग्रंथ :

1. हिन्दी साहित्य में पर्यावरणीय संवेदना– दत्ता कोल्हारे
2. अच्छे विचारों का अकाल – अनुपम मिश्र
3. हिन्दी का पर्यावरणीय साहित्य – प्रभाकरन हेब्बर इल्लत
4. आलोचना, प्रकृति और परिवेश – तारकनाथ बाली
5. हरी–भरी उम्मीद की गुंजाइश – शेखर पाठक
6. बंदिनी महानंदा– दिनेश कुमार मिश्र
7. पर्यावरण और समकालीन हिंदी साहित्य – डॉ. प्रभाकरण इल्लत

8. **समकालिन हिंदी साहित्य में पर्यावरण विमर्श – डॉ. ए. सुयेश**
9. **पर्यावरण – चेतना – प्रो. चंद्रावति**
10. **हिंदी गद्य साहित्य में प्रकृति – ओमप्रकाश सिंहल**

***

एम. ए. (प्रयोजनमूलक हिंदी) द्वितीय वर्ष
चतुर्थ अयन
Level : 6.0

PH-33 हिंदी नाटक और रंगमंच (वैकल्पिक) श्रेयांक–4

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. नाटक के स्वरूप एवं संरचना से परिचय कराना।
2. नाटक के रचनाविधान और रंगमंच से परिचय कराना।
3. हिंदी नाटक और रंगमंच के विकास से परिचित कराना।
4. नाट्यास्वादन और मूल्यांकन की प्रक्रिया से अवगत कराना।
5. नाट्यकला के प्रति अभिरूचि निर्माण कराना।

अध्यापन पद्धति :

● व्याख्यान पद्धति ● विश्लेषण पद्धति ● क्षेत्रीय भेंट

पाठ्यविषय :

इकाई– I नाटक : परंपरा और विकास, नाटक और रंगमंच, परिभाषा, स्वरूप एवं संरचना
नाटक की भारतीय परंपरा, नाटक की पाश्चात्य परंपरा, पारसी थिएटर।

इकाई– II हिंदी रंगमंच :
हिंदी रंगमंच का विकासक्रम, हिंदी रंगमंच के विकास में अनूदित नाटकों की भूमिका, रंगमंच की विभिन्न शैलियाँ, रंगभाषा, महाराष्ट्र की नाट्य परंपरा।

इकाई–III निर्धारित नाटक :
भारत–दुर्दशा–भारतेंदु हरिश्चंद्र
कथ्यगत अध्ययन, रंगमंचीय अध्ययन, तात्विक मूल्यांकन, समीक्षात्मक अध्ययन

इकाई– IV निर्धारित नाटक :
आषाढ़ का एक दिन– मोहन राकेश
कथ्यगत अध्ययन, रंगमंचीय अध्ययन, तात्विक मूल्यांकन, समीक्षात्मक अध्ययन

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात छात्र नाट्यकला से परिचित होंगे।
2. हिंदी नाटक की परंपरा का परिचय होगा।
3. छात्र रंगमंच, अभिनय, निर्देशन, नाट्य लेखन कौशल को अवगत करेंगे।
4. नाटक और सिनेमा के अंतर को समझ पाएंगे।
5. नाट्य आस्वादन की दृष्टि को विकसित करेंगे।

पाठ्यक्रम अंक विभाजन :

आंतरिक मूल्यांकन : 50

अयनांत परीक्षा : 50

कुलअंक : 100

संदर्भ ग्रंथ :

1. नाटक और रंगमंच – सं. गिरिश रस्तोगी
2. रंग दर्शन – नेमिचंद्र जैन
3. हिंदी नाटक : उद्भव और विकास – दशरथ ओझा
4. हिंदी नाटक – बच्चन सिंह
5. रंगभाषा – नेमिचंद जैन
6. पारसी थियेटर उद्भव और विकास – सोमनाथ गुप्त
7. रंगमंच का सौंदर्यशास्त्र – देवेंद्रराज अंकुर
8. बीसवीं शताब्दी का रंगकर्म – डॉ. लवकुमार
9. नाट्यालोचन – प्रो. माधव सोनटक्के
10. हिंदी नाट्य विमर्श – सं. प्रो. सदानंद भोसले

***

एम. ए. (प्रयोजनमूलक हिंदी) द्वितीय वर्ष
चतुर्थ अयन
Level : 6.0

PH-34 साहित्यिक पत्रकारिता (वैकल्पिक) श्रेयांक–4

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. साहित्यिक पत्रकारिता के स्वरूप एवं महत्व से अवगत कराना।
2. साहित्यिक पत्रकारिता का विकासात्मक परिचय कराना।
3. साहित्यिक पत्रकारिता की मुख्य प्रवृत्तियों से अवगत कराना।
4. साहित्यिक पत्रकारिता के मुख्य बिंदूओं का परिचय कराना।
5. हिंदी साहित्य में साहित्यिक पत्रकारिता के योगदान से अवगत कराना।

अध्यापन पद्धति :

● व्याख्यान पद्धति ● विश्लेषण पद्धति ● समूह चर्चा

पाठ्यविषय :

इकाई– I साहित्यिक पत्रकारिता की अवधारणा, स्वरूप एवं महत्व
साहित्यिक पत्रकारिता का विकासात्मक परिचय
साहित्यिक पत्रकारिता की मुख्य प्रवृत्तियाँ

इकाई– II साहित्य और पत्रकारिता का अंत:संबंध
भारतेंदु युगीन साहित्यिक पत्रकारिता : स्वरूप और प्रमुख विशेषताएँ, प्रमुख साहित्यिक पत्रकार, साहित्यिक पत्रिकाएँ और उनका कार्य

इकाई–III द्विवेदी युगीन साहित्यिक पत्रकारिता :
स्वरूप और प्रमुख विशेषताएँ
प्रमुख साहित्यिक पत्रकार और उनकी पत्रकारिता

इकाई– IV छायावाद युगीन तथा छायावादोत्तर साहित्यिक पत्रकारिता का स्वरूप, कार्य एवं प्रमुख विशेषताएँ, प्रमुख साहित्यिक पत्रकार

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. पत्रकारिता और साहित्यिक पत्रकारिता के अंतर को समझ पाएंगे।
2. आधुनिक हिंदी साहित्य के इतिहास में विविध युगों में साहित्यिक पत्रकारिता के योगदान से अवगत होंगे।
3. साहित्यिक पत्रकारिता की मुख्य प्रवृत्तियों का परिचय प्राप्त करेंगे।
4. हिंदी की प्रमुख साहित्यिक पत्रकारिता के समग्र रूप में अवलोकन कर पाएंगे।
5. साहित्य और साहित्यिक पत्रकारिता के अंतः संबंध को जान पाएंगे।

पाठ्यक्रम अंक विभाजन :

आंतरिक मूल्यांकन : 50

अयनांत परीक्षा : 50

कुलअंक : 100

संदर्भ ग्रंथ :

1. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेंद्र
2. हिंदी पत्रकारिता स्वरूप और संदर्भ – डॉ. विनोद गोदरे
3. हिंदी पत्रकारिता के विविध आयाम – वेद प्रताप वैदिक
4. साहित्यिक पत्रकारिता – ज्योतिष जोशी
5. हिंदी पत्रकारिता का इतिहास – मिनाक्षी सिंह
6. पत्रकारिता का इतिहास एवं जनसंचार माध्यम – संजीव भानावत
7. हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता – डॉ. राजेंद्र मिश्र
8. साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य – अरूण तिवारी
9. साहित्यिक पत्रकारिता सिद्धांत एवं व्यवहार– डॉ. कौशिक
10. हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता – प्रो. रमा

***

एम. ए. (प्रयोजनमूलक हिंदी) द्वितीय वर्ष
चतुर्थ अयन
Level : 6.5

PH- 27 प्रबंध लेखन (परियोजना – II) श्रेयांक–6

- **शोध प्रबंध लेखन के उद्देश्य :**
  1. छात्रों की शोध–अभिवृत्ति को विकसित कराना।
  2. अनुसंधान की तकनीक एवं प्रक्रिया से अवगत कराना।
  3. अनुसंधान का महत्व एवं उपादेयता से परिचित कराना।
  4. छात्रों का अनुसंधान कौशल विकसित कर अनुसंधान के लिए विषय चयन तथा उसकी समस्याओं के समाधान के लिए सक्षम बनाना।
  5. बृहत अनुसंधान कार्य की दिशा में छात्रों का समझ का विस्तार करना।
- **प्रबंध लेखन का स्वरूप :**
  - विषय चयन एवं शीर्षक, प्रमाणपत्र और घोषणा
  - अनुक्रमणिका
  - अध्याय विभाजन
  - विषय एवं शीर्षकानुरूप शोध–विवेचन
  - आवश्यक संदर्भ एवं शोध प्रविधियों का प्रयोग
  - उपसंहार एवं संदर्भ ग्रंथ सूची
- **प्रबंध लेखन संबंधी आवश्यक निर्देश :**
  1) छात्र शोध–निर्देशक के साथ चर्चा कर शोध–विषय निश्चित कर सकेंगे।
  2) छात्र साहित्य की किसी भी विधा पर शोध प्रबंध तैयार कर सकेंगे।
  3) छात्र को शोध प्रबंध का कार्य नियत अवधि में पूरा कर संबंधित शोध–निर्देशक के पास जमा करना होगा।
  4) छात्र को शोध प्रबंध के सभी मानकों का अनुपालन करते हुए पूरा करना होगा।
  5) शोध प्रबंध का विस्तार लग–भग 75-125 पृष्ठों में हो।

6) शोध प्रबंध पूरा होने के पश्चात उसकी प्रस्तुति पी.पी.टी. द्वारा कर मौखिकी देनी होगी।

7) शोध–निर्देशक के लिए समान अनुपात में छात्रों का आबंटन होगा।

- **शोध प्रबंध का मूल्यांकन :**

1) शोध प्रबंध का मूल्यांकन शोध–निर्देशक द्वारा किया जाएगा।

2) पॉवर पाइंट प्रजेंटेशन तथा मौखिकी के लिए शोध–निर्देशक, अंतर्गत परिक्षक एवं बाह्य परिक्षक इन तीन सदस्यों का पैनल होगा।

3) पी.पी.टी. और मौखिकी का मूल्यांकन अंतर्गत परिक्षक तथा बाह्य परिक्षक करेंगे।

- **शोध प्रबंध अंक विभाजन :**

शोध प्रबंध लेखन	पॉवर पॉइंट प्रजेंटेशन	मौखिकी	कुल अंक
100	25	25	150

- **शोध प्रबंध की उपादेयता :**

1) छात्र अनुसंधान कौशल तथा उसके महत्व से अवगत होंगे।

2) अनुसंधान की प्रविधि एवं प्रक्रिया से परिचित होंगे।

3) अनुसंधान की विविध प्रविधियों का परिचय प्राप्त करेंगे।

4) समस्या का चयन, समस्या का समाधान तथा नए निष्कर्ष स्थापित कर सकेंगे।

5) शोध–सार, संदर्भ, आधार ग्रंथ, सहायक ग्रंथ, शोध के लिए उपयोगी साधनों से परिचित होंगे।

एम. ए. (प्रयोजनमूलक हिंदी) प्रथम तथा द्वितीय वर्ष
परीक्षा पद्धति, मूल्यांकन एवं अंक विभाजन

* आंतरिक मूल्यांकन (4 श्रेयांक)

- लघुत्तरी परीक्षा : 20 अंक
- शोध–परियोजना : 20 अंक
- शोध–परियोजना प्रस्तुति : 10
- अयनांत परीक्षा : 50
- कुल अंक : 100

* आंतरिक मूल्यांकन (2 श्रेयांक)

- लघुत्तरी परीक्षा : 15 अंक
- शोध–परियोजना : 05 अंक
- शोध–परियोजना प्रस्तुति : 05
- अयनांत परीक्षा : 25
- कुल अंक : 50

* लघुत्तरी एवं अयनांत परीक्षा/प्रश्नपत्र स्वरूप

* लघुत्तरी परीक्षा (4 श्रेयांक) में कुल आठ प्रश्न विकल्प के साथ होंगे, जिनमें से चार प्रश्न लिखने होंगे। प्रति प्रश्न अंक (05) होंगे।
* अयनांत परीक्षा (4 श्रेयांक) में विकल्प के साथ कुल दस प्रश्न होंगे, जिनमें से पाँच प्रश्न लिखने होंगे। प्रति प्रश्न अंक (10) होंगे।
* लघुत्तरी परीक्षा (2 श्रेयांक) में विकल्प के साथ कुल छह प्रश्न होंगे, जिनमें से केवल तीन प्रश्न लिखने होंगे। प्रति प्रश्न अंक (05) होंगे।

* **अयनांत परीक्षा (2 श्रेयांक) में विकल्प के साथ कुल छह प्रश्न होंगे, जिनमें से केवल तीन प्रश्न लिखने होंगे। दोन प्रश्न दीर्घोतरी तथा तीसरा प्रश्न टिप्पणी का होगा। दीर्घोतरी प्रश्न के लिए प्रति प्रश्न अंक 10 होंगे तथा टिप्पणी के लिए 5 अंक होंगे।**
* **शोध परियोजना पाठ्यविषय से संबंधित होगी। विद्यार्थी अध्यापक के साथ विचार–विमर्श कर शोध–परियोजना का विषय निश्चित कर सकते हैं।**
* **विद्यार्थी द्वारा संपन्न शोध–परियोजना पर आधारित प्रस्तुति होगी।**

***